



तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

उड़ान

ई-पत्रिका 2021-22



केन्द्रीय विद्यालय संगठन
लखनऊ संभाग



केन्द्रीय विद्यालय संगठन, लखनऊ संभाग KENDRIYA VIDYALAYA SANGATHAN, LUCKNOW REGION

संरक्षक



श्री देवेन्द्र कुमार द्विवेदी
उपायुक्त, के.वि.सं. (ल.सं.)

मार्गदर्शक



श्री तारकेश्वर प्रसाद गौड़
सहायक आयुक्त, के.वि.सं. (ल.सं.)

पत्रिका समन्वयक



श्रीमती प्रीति सक्सेना
सहायक आयुक्त, के.वि.सं. (ल.सं.)

मुख्य संपादक

श्री घनश्याम पाण्डेय, प्राचार्य
केन्द्रीय विद्यालय वायुसेना स्थल, बी.के.टी. लखनऊ

संपादक मंडल

1. श्रीमती सारिका सिंह, पी.जी.टी. (अंग्रेजी), केन्द्रीय विद्यालय जे.एल.ए. बरेली (उत्तर प्रदेश)
2. श्रीमती मीता गुप्ता, पी.जी.टी. (हिंदी), केन्द्रीय विद्यालय एन. ई. आर. बरेली (उत्तर प्रदेश)
3. श्री राकेश कुमार गुप्ता, पुस्तकालयाध्यक्ष, केन्द्रीय विद्यालय वायुसेना स्थल, बी.के.टी. लखनऊ
4. श्रीमती सना अनवर, पुस्तकालयाध्यक्ष, केन्द्रीय विद्यालय सी.आर. पी. एफ. बिजनौर लखनऊ
5. श्रीमती प्रीति बाला, टी. जी. टी (कार्यानुभव), केन्द्रीय विद्यालय गोमतीनगर लखनऊ

आवरण पृष्ठ एवं पत्रिका का नामकरण - सुश्री प्राची सिंह, कक्षा-12 केन्द्रीय विद्यालय बाराबंकी



संदेश

केन्द्रीय विद्यालय संगठन, लखनऊ संभाग द्वारा विभिन्न केन्द्रीय विद्यालयों के छात्र-छात्राओं के ग्रीष्म-कालीन अवकाश के दौरान लेखनीबद्ध अनुभवों, कल्पनाओं, रचनाओं को संकलित करते हुए संभाग स्तरीय ई-पत्रिका “उड़ान” का प्रकाशन किया जा रहा है।

विगत एक वर्ष से अधिक समय से कोरोना महामारी की विषम परिस्थितियों के बीच विद्यार्थी विद्यालय प्रांगण से दूर हैं, वे ऑनलाइन माध्यम से शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। इन चुनौती पूर्ण परिस्थितियों में भी छात्रों की रचनाशीलता एवं विचाराभिव्यक्ति इस बात का प्रमाण है कि यदि हमारे अन्दर हिम्मत एवं आत्मविश्वास है तब कोई भी बाधा हमें आगे बढ़ने से नहीं रोक सकती।

यह “उड़ान” ई-पत्रिका छात्र-छात्राओं के अनुभवों, भावनाओं, विचारों, उनकी कल्पनाओं के उड़ान को न केवल आकाश देने का कार्य कर रही है अपितु भावी कर्णधारों को प्रोत्साहित भी कर रही है। छात्र-छात्राओं, शिक्षकों, प्राचार्यों एवं अभिभावकों के सम्मिलित प्रयत्न से यह संकलन संभव हो सका है एवं इस हेतु मैं सभी नवोदित रचनाकारों एवं संपादक मंडल के सदस्यों को धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ।

आशा करता हूँ कि बच्चों की नन्हीं कुंची व कलम से प्रवाहित हुई इन कृति-सरिताओं को आप उनके एक प्रयास के रूप में देखकर सराहेंगे ताकि उन्हें और आगे बढ़ने का हौसला मिल सके।

अंत में इस पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी ओर से अशेष शुभकामनाएँ।

(देवेन्द्र कुमार द्विवेदी)
उपायुक्त

केन्द्रीय विद्यालय संगठन,
लखनऊ संभाग

तत् त्वं पूषन् अपावृणु



संदेश

मुझे यह साझा करते हुए हर्ष की अनुभूति हो रही है कि केन्द्रीय विद्यालय संगठन, लखनऊ संभाग ने ग्रीष्मकालीन अवकाश के दौरान छात्र-छात्राओं की गतिविधियों एवं सृजन को संकलित कर “उड़ान” ई-पत्रिका के माध्यम से प्रकाशित करने का निर्णय लिया है।

छात्र-छात्राओं की कल्पनाशीलता, रचनाशीलता, बहुआयामी अनुभव संचयन एवं ग्रीष्मकालीन अवकाश में विद्यार्थियों के कृतित्व के प्रकाशन में ई-पत्रिका उड़ान सफल होगी, ऐसा मेरा विश्वास है।

विद्यार्थियों की क्षमता असीम है। आज का विद्यार्थी ही भारत का भविष्य है। जीवन कौशल के विकास में विद्यार्थी की सृजनात्मकता एवं परिश्रम की महत्वपूर्ण भूमिका है। छात्र-छात्राओं ने अवकाश के समय का सदुपयोग कर एवं कोरोना महामारी जन्य दुश्चिंता से मुक्त रह कर अपनी लेखनी से कागज पर जो सृजन के बीज बोए हैं, भविष्य में वे अवश्य फलीभूत होंगे।

यह ई-पत्रिका “उड़ान” छात्र-छात्राओं के विचारों एवं उनकी रचनात्मकता की उड़ान है। आशा करता हूँ कि भावाभिव्यक्ति को शब्दों एवं चित्रों में पिरो कर “उड़ान” के माध्यम से जब प्रकाशित होगी, तो इन नन्हें रचनाकारों के आकाश छूने के प्रयास को सभी पाठकगण सराहेंगे एवं प्रोत्साहित करेंगे। शुभकामनाओं के साथ,

(तारकेश्वर प्रसाद गौड़)

सहायक आयुक्त

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

लखनऊ संभाग

तत् त्वं पूषन् अपावृणु



संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि विद्यार्थियों की सृजनात्मक प्रतिभा को उड़ान देने हेतु केन्द्रीय विद्यालय संगठन, लखनऊ संभाग ई-पत्रिका उड़ान का प्रकाशन कर रहा है।

कोविड-19 महामारी से हमारे जीवन में अप्रत्याशित परिवर्तन हुए हैं। इन परिवर्तनों ने मनुष्य को शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक रूप से प्रभावित किया है। इन दुसाध्य परिस्थितियों में भी हमारे विद्यार्थी जिस हिम्मत, लगन एवं क्रियाशीलता से सृजन में संलग्न एवं संबद्ध हैं, वह प्रशंसनीय ही नहीं अपितु अनुकरणीय भी हैं।

ग्रीष्मकालीन अवकाश के दौरान विद्यार्थियों ने अपनी योग्यता एवं अभिरुचियों के अनुसार स्व-रचित कृतियों से अपने अनुभवों को कल्पना के पंख दिए हैं, जिसे इस ई-पत्रिका "उड़ान" के माध्यम से प्रस्तुत किया जा रहा है।

आशा है कि आपको इन नवोदित कलमकारों की रचनाएँ पसंद आएंगी एवं इन्हें प्रोत्साहन मिलेगा। इस ई-पत्रिका "उड़ान" के संपादक मंडल के सदस्यों, छात्र-छात्राओं, शिक्षकों, प्राचार्यों एवं अभिभावकों को इस सार्थक प्रयास हेतु साधुवाद!

शुभकामनाओं के साथ,

(प्रीति सक्सेना)
सहायक आयुक्त
केन्द्रीय विद्यालय संगठन
लखनऊ संभाग

तत् त्वं पूषन् अपावृणु



अनुक्रमणिका

उड़ान

क्र.सं.	लेख	लेखक	पृष्ठ सं.
1	जब तक जीवन संघर्षों की बात करो	अनुक्ता चौहान	1
2	कवि की उलझन	रीतेश	2
3	एक जन्मदिन ऐसा भी	परिजात पाण्डेय	3
4	कोरोना अब डरेगा	अन्वेषा कोले	4
5	शहर बदलते देखा है	तनुश्री शर्मा	5
6	क्रिकेट का चढा बुखार	दिव्यम पाण्डेय	6
7	सफलता	दृश्यवीर तोमर	7
8	पुस्तक समीक्षा: तोतो चान: द लिटिल गर्ल एट द विंडो	ईशा सिंह	8-9
9	स्कूल के वो दिन	प्रज्ञा कुमारी	10
10	बच्चे	अखंड प्रताप सिंह	11
11	बहुत हुआ ऑनलाइन लेक्चर	सना	12
12	कोरोना	भताने तनुजा	13
13	घड़ी की महत्ता	रौनक वर्मा	14
14	कोरोना वायरस	वंशिका गंगवार	15
15	कोरोना तुझे हम हराएँगे	सक्षम त्रिवेदी	16
16	कोविड -19 सकारात्मक सोच ज़रूरी है	नंदिता मिश्रा	17
17	घर पर रह कर फ़िटनेस और वैलनेस	अर्जित सिंह	18
18	चिट्ठी	कार्तिक	19
19	जीतने की अभिलाषा	वंशिका त्रिपाठी	20
20	प्रकृति	कुमारी कौशिकी यादव	21
21	मुझे इस दुनिया में रहना है	जतिन प्रकाश	22
22	प्रारब्ध	अर्पिता मेहरोत्रा	23
23	मेरे वतन के लिए एक संदेश!	नीलम सोलंकी	24
24	चल पड़ी पतंग	मृत्युंजय पटेल	25
25	होती थी पहले जब गर्मियों की छुट्टियाँ	श्रीदर्शी	26
26	दो घड़े	सिद्धांत सिंह	27
27	एक कहानी	रौनक यादव	27
28	LEARNING AND CELEBRATIONS 2021	BHAVYAA VERMA	28
29	BIRD FEEDER	PUSHPANJALI PRINCY	29
30	GOD AND SMOKE	APARAJITYAGYA SAINI	30
31	RETURN TO HOMELAND	AISHWARYA RAJ SINGH	31



अनुक्रमणिका

उड़ान

क्र.सं.	लेख	लेखक	पृष्ठ सं.
32	HORROR MOVIE PARANOIA	BIPASANA BHATTACHARYA	32
33	THE COVID PHASE	YAMINI SINGH	33
34	SUMMER VACATION	SIDDHANT SRIVASTAVA	34
35	LOCKDOWN	NIVEDIKA SHARMA	35
36	UNEXPECTED MOTIVATION	ABDULLAH USMANI	36
37	THE BIRTHDAY CHILD	VEDANSHI VAISH	37
38	THE THANKFUL BIRD	VEDANSHI VAISH	37
39	NATIONAL EMBLEM OF INDIA	SUYASH CHANDRA TRIPATHI	38
40	DEAR CORONAVIRUS	DRASHYAVEER TOMAR	39
41	FOLK PAINTINGS OF INDIA	HARSH DUBEY	40-41
42	THINKING POSITIVE	ESHANI PATEL	42
43	THE GIRL NAMED "HELEN"	SOUMYA TIWARI	43
44	VALUE OF TIME	ANUSHKA SAXENA	44
45	HEAL THE PLANET	PALAK	45
46	EXPERIENCE DURING LOCKDOWN	ANUSHREE SINGH	46
47	REVENGE OF MOTHER NATURE	ANIKET SINGH RATHORE	47
48	TIME MANAGEMENT TIPS	MUNIS SHAFIQ	48
49	JUST FEEL	DIVYANSHI	49
50	WALKING LANES OF LOCKDOWN	KHUSHI	50
51	BE RESPONSIBLE	JANHVI SINGH	51
52	LOVE YOU ALL	TANU GAUTAM	52
53	ONLINE SUMMER CAMP	AVIKA SHARMA	53
54	PAINTING	DYASHYAVEER TOMAR	54
55	PAINTING	AAKRITI VERMA	55
56	PAINTING	ANKITA	56
57	PAINTING	VIKAS CHAUDHARY	57
58	PAINTING	PARTH SINGH	58
59	PAINTING	ANANYA SACHAN	59
60	PAINTING	DEEPTI YADAV	60
61	PAINTING	VISHWAM SRIVASTAVA	61
62	PAINTING	VAISHNAVI TIWARI	62
63	PAINTING	ADITI RATHORE	63
64	PAINTING	VAISHNAVI SHARMA	64
61	PAINTINGS		65-66
62	VARIOUS ACTIVITIES		67-69
63	DISCLAIMER		70



जब तक जीवन संघर्षों की बात करो

उड़ान

अनुक्ता चौहान, कक्षा-9,
केन्द्रीय विद्यालय आर.आर.सी फतेहगढ़



राष्ट्र धरा के उत्कर्षों की बात करो,

केवल जीवन संघर्षों की बात करो।

बीत गया उसको जाने दो.

नयी हवाओं को आने दो.

और निराशा को जीवन में

कभी नहीं छाने दो

हो हताश मत उत्कर्षों की बात करो.

केवल जीवन संघर्षों की बात करो।

हार-जीत की मिथ्या-भाषा.

मिटती नहीं कभी अभिलाषा

केवल इतनी बात समझ लो

चलना जीवन की परिभाषा



कवि की उलझन

रीतेश, कक्षा-10 ब,

केन्द्रीय विद्यालय क्रं.1 चकेरी, कानपुर



क्या कहते हो?

क्या लिखूं ?

नदियों के गुणगान म

या फिर माँ के सम्मान में !

नहीं-नहीं गरीबी पर लिखता हूँ,

मैं भी तो दूर से वही दिखता हूँ।

क्यों न धर्म का उल्लेख करूँ?

नहीं, सेना का बखान करता हूँ,

क्या आज देश प्रेम पर लिखूँ?

इसी से तो मैं महान बनता हूँ।

इतिहास के आलोक पर लिखूँ

या फिर समस्याओं के विषय में

रस अलंकार का मिश्रण लिखूँया,

अर्थों की माला है, जिसके आशय में।

चलो, शिक्षक का महत्व बताता हूँ,

क्यों ना प्रेम पर कविता बनाऊँ?

या हास्य से सब को हंसाऊँ?

पर....पर मैं यह सब क्यों सोच रहा?

मेरे पास तो अनंत-सीमाहीन गगन है,

मेरे शब्द कोश में शब्द भी मगन हैं,

किसी भी विषय पर लेखनी फेरूँ,



एक जन्मदिन ऐसा भी(संस्मरण)

पारिजात पांडेय, कक्षा-8 अ
केन्द्रीय विद्यालय , फ़ैज़ाबाद कैंट



आज मैं आप लोगों के साथ एक ऐसी घटना साझा करना चाहता हूँ, जिसने मेरे मन पर बहुत गहरी छाप छोड़ी है। ये बात है फरवरी माह सन् 2021 की। कोरोना की प्रथम लहर कुछ धीमी पड़ चुकी थी। स्कूल जाना बिल्कुल बंद ही था। मेरे माता-पिता आने वाले त्यौहार होली की कुछ चर्चा कर रहे थे। तभी मेरे मन में एक प्रश्न उठा कि होली, दिवाली और रक्षाबंधन आदि त्यौहार हर वर्ष अलग-अलग तारीखों पर क्यों पड़ते हैं? मैंने तुरंत ही यह प्रश्न अपने माता-पिता के समक्ष रखा। उन्होंने मुझे समझाया कि जिस प्रकार जनवरी, फरवरी, मार्च इत्यादि अंग्रेजी कैलेंडर के माह हैं उसी प्रकार हिंदी कैलेंडर के माह चैत्र, वैशाख, भाद्रपद इत्यादि होते हैं। सभी हिंदू व्रत एवं त्यौहार उसी कैलेंडर (पंचांग) के हिसाब से मनाए जाते हैं। उन्होंने मेरी जिज्ञासा शांत करते हुए यह भी बताया कि होली का त्यौहार फाल्गुन मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है, दीपावली का त्यौहार कार्तिक मास की अमावस्या को मनाया जाता है तथा रक्षाबंधन श्रावण मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है।

मेरे माता-पिता जितना मुझे बता रहे थे मेरी उत्सुकता एवं जिज्ञासा उतनी ही बढ़ती जा रही थी। उनके उत्तर आने के साथ ही मेरा अगला प्रश्न तैयार रहता था। चूंकि फरवरी का महीना मेरे लिए बहुत खास होता है, आखिर मेरा जन्मदिन जो पड़ता है फरवरी में। मेरा अगला प्रश्न यही था कि हिंदी माह के हिसाब से मेरा जन्मदिन कब पड़ता है। मेरी मम्मी ने मुझे बताया कि मेरा जन्म माघ माह के शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि को हुआ था। मेरे माता-पिता के आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब मैंने उनसे कहा कि क्यों न मेरा जन्मदिन हिंदी माह के हिसाब से मनाया जाए। मेरा यह प्रस्ताव उनके लिए बिल्कुल अनपेक्षित था। वे समझ नहीं पा रहे थे कि मेरी बात का क्या उत्तर दें? परंतु इतना उन्होंने अवश्य कहा कि चलो, तुम्हारे जन्मोत्सव ईश्वर की आराधना का विधान करते हैं। उन्हें बिल्कुल भी उम्मीद न थी कि मैं इसके लिए भी तैयार हो जाऊंगा।

यूँ तो मेरे घर पर कुछ न कुछ धार्मिक अनुष्ठान-पूजा इत्यादि होती रहती थी, परंतु मैंने कभी उनका महत्त्व जानने की कोशिश नहीं की थी। परंतु इस बार मैं बहुत उत्साहित था। मेरे माता-पिता ने घर में बने मंदिर में मेरे जन्मदिन के दिन मुझसे पूजा करवाई। मैंने पूरे उत्साह, तन्मयता एवं श्रद्धा से उसमें भाग लिया। उससे भी बढ़कर आनंद मुझे तब आया, जब हम एक वृद्धाश्रम में गए और वहाँ जाकर बुजुर्गों को कुछ वस्तुएँ दान कीं।

सच कहूँ, तो वह दिन मेरे जीवन का अविस्मरणीय दिन है क्योंकि मुझे लगता है कि उसी दिन अपनी संस्कृति से मेरा प्रथम परिचय हुआ, ऐसी संस्कृति, जिसमें मानव-कल्याण की भावना कूट-कूट कर भरी हुई है। उस दिन मैंने सीखा-

विचार लो कि मर्त्य हो न मृत्यु से डरो कभी,

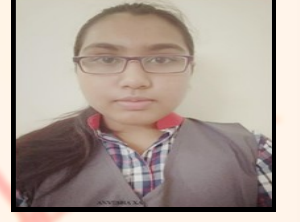
मरो, परंतु यों मरो कि याद जो करें सभी।

हुई न यों सुमृत्यु तो वृथा मरे, वृथा जिए,

मारा नहीं वही कि (3) जो जिया न आपके लिए।

कोरोना अब डरेगा

अन्वेषा कोले. कक्षा- 10 अ,
केन्द्रीय विद्यालय, फ़ैज़ाबाद कैंट

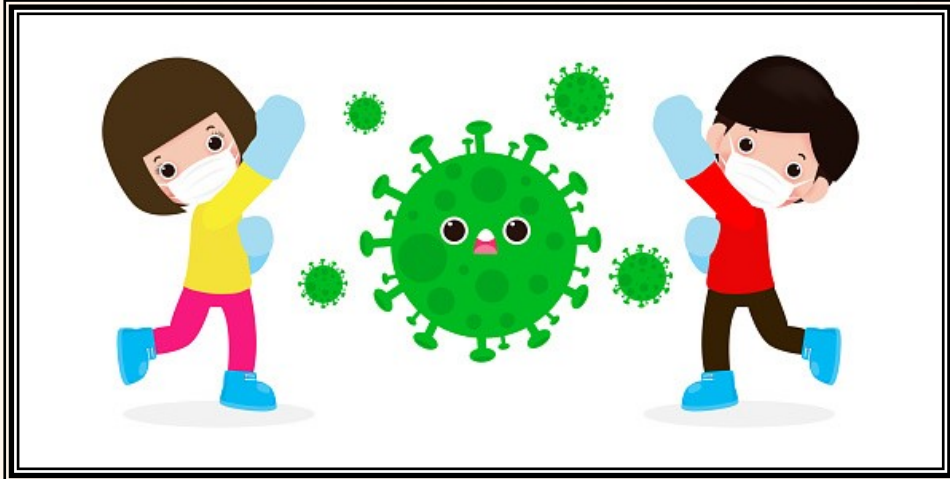


बयान कर रहा है जहान , ढाके ऐसा कहर ,
हवाओं में है मिला, क्या पता कैसा ज़हर,
है बेबसी का तूफ़ान, है खौफ़ की लहर ।

कर गया इंसान को इस तरह बीमार कौन ?
ज़िंदगी के सफ़र को कर गया तबाह कौन ?
है वक्त अभी भी, अभी तो जान है बाकी,
संवारेंगे जो बिगड़ा, अभी भी ईमान है बाकी,
हकीकत है यहीं, अभी भी हम हैं बाकी।

होंगे हम सब सेहतमंद, करेंगे खुद की सलामती,
पहनेंगे मास्क, धोएंगे हम हाथ कई बार सभी।

मुश्किलों के दौर में, एक काम किया जाए ,
घर पर ही रहकर, इसे नाकाम किया जाए ,
चलो इस आफ़त को, तंदुरुस्ती से हराया जाए ,
योग कर व्यायाम कर, स्वास्थ्य को बढ़ाया जाए,



शहर बदलते देखा है

तनुश्री शर्मा, कक्षा-12,
केन्द्रीय विद्यालय अलीगंज, लखनऊ



दिन भर उजियारा फैला कर,
सूरज को ढलते देखा है।
बीते इन दो वर्षों में,
शहर को बदलते देखा है।
रुक-सा गया है जीवन सबका,
फिर भी जीवन चलते देखा है।
जो कहते थे खुद को सबका,
उनको भी बदलते देखा है।
खुद को समझते और समझाते,
लोगो को बिलखते देखा है।
हँस कर भी और रो कर भी,
पर सबको संभलते देखा है।
बीते इन दो वर्षों में,
शहर को बदलते देखा है।
जो कहते थे व्यस्त बहुत हैं,
उनको भी रुकते देखा है,
चहल - पहल थी जो जीवन में,
उसको भी छिनते देखा है।
जो हिस्सा था जीवन का,
वह जगह छूटते देखा है।
जो थे अपने प्रिय वहाँ,
उनको भी बिछड़ते देखा है।
बीते इन दो वर्षों में,
शहर को बदलते देखा है।

क्रिकेट का जब चढ़ा बुखार

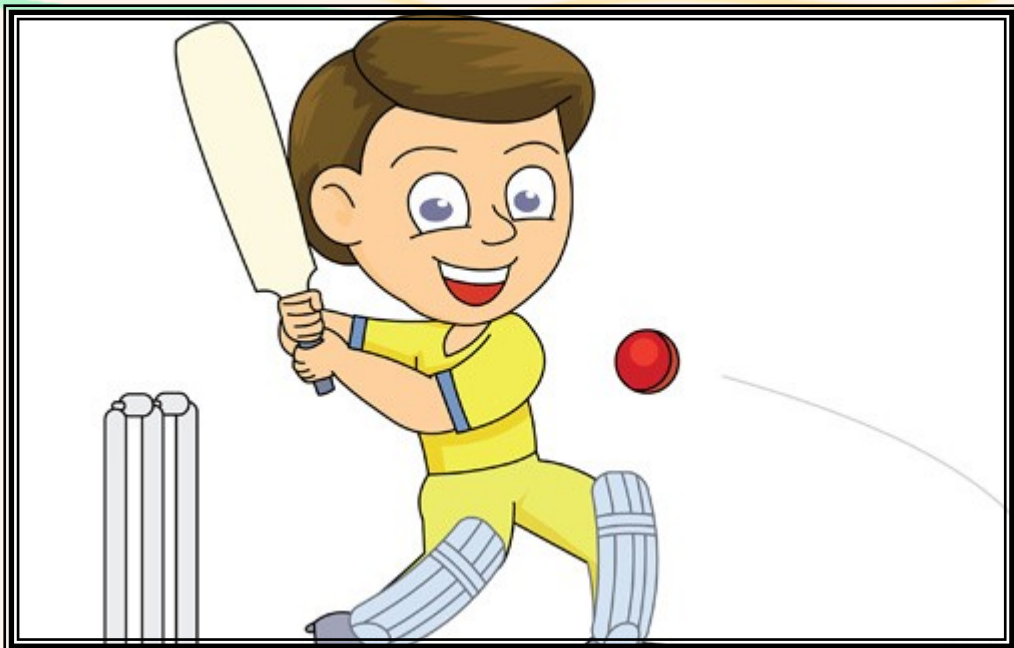
दिव्यम पाण्डेय, कक्षा 7- ई,
केन्द्रीय विद्यालय नं. 2 ओ.ई.एफ. शाहजहाँपुर



क्रिकेट का जब चढ़ा बुखार, मन में आया एक विचार
क्यों ना मैं एक टीम बनाऊँ, पहला वर्ल्ड कप जीत के लौऊँ
मैं बोला कप्तान बनूँगा पहले बैटिंग मैं ही करूँगा
मेरे हाथ में बैट जो आया कपिल देव को मज़ा चखाया

आखिरी गेंद कपिल ने डाली, दम लगा कर इस बार
मैंने ज़ोर से गेंद उछाली, देखो, यह तो हवा में घूमी,
और पहुंची बाउंड्री पार!

और.. और मेरा सपना हुआ साकार





सफलता

दृश्यवीर तोमर, कक्षा -6 ब,
केन्द्रीय विद्यालय, बी .के. टी., लखनऊ



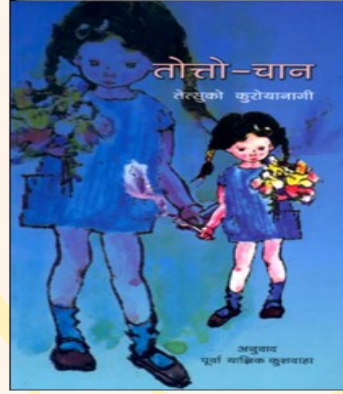
मस्तिष्क के किसी कोने में एक प्रकाश सा छाया
कल जब डिक्टेसन मे सक्सेस शब्द आया
क्यों चाहता है पाना हर कोई जिसे दिल से
क्या आपके दिल में कभी ये ख्याल आया ।

सक्सेस यानी सफलता मतलब है जिसका
एक मुकाम को पाना हो लक्ष्य जिसका
फिर एक नयी यात्रा उस मुकाम से आगे
ना मिले जब तक कोई गंतव्य उसका ।



पुस्तक समीक्षा: तोत्तो-चान

ईशा सिंह, कक्षा -12 अ,
केन्द्रीय विद्यालय ,पू.रे. बरेली



येषां न विद्या, न तपो, न दानं ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः ।

ते मर्त्यलोके भुवि भारभूताः मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति ॥

अर्थात् जो विद्या के लिए प्रयत्न नहीं करते, न तप करते हैं, न दान देते हैं, न ज्ञान के लिए यत्न करते हैं, न शील है और न ही जिनमें और कोई गुण हैं, न धर्म है (सही आचरण है), ऐसे लोग मृत्युलोक में इस धरती पर बोझ ही हैं, मनुष्य रूप में वे वास्तव में जानवर ही हैं।

कोविड-19 के इन दुर्दिनों में मैंने अपनी सकारत्मकता बनाए रखने के लिए अच्छी पुस्तकें पढ़ने का निर्णय लिया । मुझे 'तोत्तो-चान: द लिटिल गर्ल एट द विंडो' पुस्तक अपनी हिंदी शिक्षिका श्रीमती मीता गुप्ता के माध्यम से प्राप्त हुई ।पहली नज़र में ऐसा लगा कि मैं बाल-साहित्य पढ़ने जा रही हूँ,पर मैं जैसे-जैसे 1981 में प्रकाशित हुई इस पुस्तक को पढ़ती गई , वैसे-वैसे मुझे यह समझ आ गया कि अपने प्रकाशन के पहले वर्ष में इस पुस्तक की 4.5 मिलियन प्रतियां क्यों बिकी होंगी ?

यह संभवतः पहली बार हुआ कि जब किसी पुस्तक ने मुझे एक ही समय में मुस्कराने, हंसने, रोने और भावुक होने के लिए प्रेरित किया होगा । सरल प्रसंगों और उदाहरणों के माध्यम से हम तोत्तो चान की आँखों से दया, ईमानदारी, दोस्ती और सम्मान के मूल्य सीखते हैं।

यह पुस्तक जापानी टेलीविज़न हस्ती और यूनिसेफ सद्भावना राजदूत टेत्सुको कुरोयानागी द्वारा लिखित है ।यह मूल रूप से 1981 में 'मदोगिवा नो तोत्तो-चान' के रूप में प्रकाशित हुई ,जो कालांतर में जापान की बेस्टसेलर पुस्तक बन गई। लेखक के बचपन का संस्मरण मानी जाने वाली यह पुस्तक, द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान शिक्षक सोसाकु कोबायाशी द्वारा स्थापित टोक्यो प्राथमिक विद्यालय, टोमो गाकुएन में दी जाने वाली अपरंपरागत शिक्षा का वर्णन करती है।

यह एक आकर्षक, अद्भुत, सुंदर और समझदार कहानी है,जो एक छोटी लड़की तोत्तो-चान के बचपन की यादों और रोमांच को चित्रित करती है। उसके स्कूल की शिक्षा प्रणाली और विद्यार्थियों ने अपने विषयों को अलग तरीके से पढ़ने का आनंद कैसे लिया, को अच्छी तरह से चित्रित करती है।

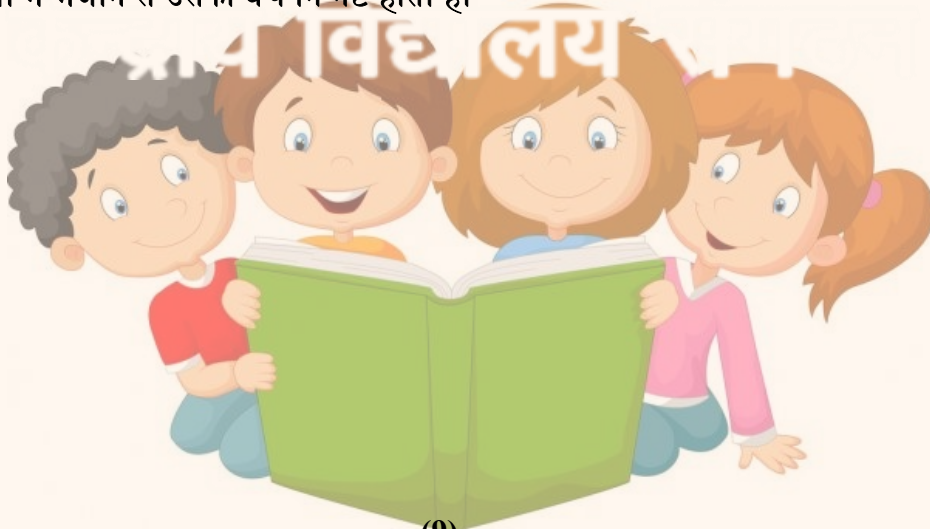
कहानी टेटसुको कुरोयानागी की वास्तविक जीवन की घटनाओं पर आधारित है, जो इस पुस्तक के लेखक हैं और शरारती छोटी लड़की तोत्तो-चान, जिसे पहली कक्षा में ही एक स्कूल से निकाल दिया गया और प्रधानाध्यापक द्वारा इस स्कूल में भर्ती कराया गया। सोसाकु कोबायाशी इस स्कूल के संस्थापक हैं। यह स्कूल किसी आम स्कूल की तरह नहीं है, यहाँ तक कि क्लासरूम भी बहुत अलग हैं और रेलरोड कारों से बने हैं। स्कूल के पाठ्यक्रम में अंतिम संस्कार में शामिल होना, अस्पताल में सैनिकों से मिलना आदि भावुक कर देने वाला है।

इस प्रकार की शिक्षा प्रणाली का मकसद न केवल बच्चों को जीवन में सफलता प्राप्त करने के गुर सिखाना है, बल्कि उन्हें एक अच्छा इंसान बनना भी है, जो दूसरे जीवों से प्यार करे, उनकी परवाह करे, निर्बलों और असमर्थों का सम्मान करे और दूसरों के प्रति संवेदना रखे।

उपसंहार से पता चलता है कि उस स्कूल के विद्यार्थियों ने अपने रुचि के क्षेत्रों में कैसे उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। प्रत्येक अध्याय को समझदारी से लिखा गया है और अच्छी तरह से अनूदित किया गया था। यदि मैं पुस्तक के अंशों और टिप्पणियों को उद्धृत करना शुरू कर दूँ, तो मैं पूरी पुस्तक को लिप्यंतरित कर सकती हूँ, परंतु यह एक संभावित पाठक की जिज्ञासा को नष्ट कर देगा।

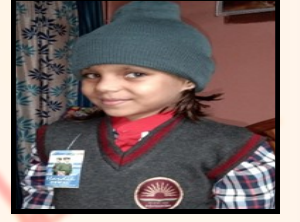
यह एक ऐसी पुस्तक है, जिसे हर माता-पिता और शिक्षक को पढ़ना चाहिए। यँ तो यह बच्चों के बारे में लिखी एक पुस्तक है, परंतु इसे वयस्कों को भी पढ़ना चाहिए, यदि वे अपने हृदय में छुपे बच्चे को ज़िंदा रखना चाहते हैं।

पुस्तक सादगी से परिपूर्ण है, जापानियों की तरह। इसमें कोई जादू का स्कूल नहीं है, जीवन और सीखने के बारे में कोई दार्शनिकरूपक नहीं है, कोई राक्षस नहीं, कोई परी नहीं। लेकिन हर पंक्ति दिल को छू जाती है। हर शब्द बचपन की याद दिलाता है। अपने बचपन को याद करने के लिए पुस्तक पढ़ें। अच्छे लेखन की तीक्ष्णता का स्वाद लेने के लिए पुस्तक पढ़ें। अपने बच्चों और खुद को यह सिखाने के लिए पुस्तक पढ़ें कि मोबाइल से पहले भी जीवन था और यह बात 'एलेक्सा' और 'नेटफ्लिक्स' के सामने भी उजागर हो। यह याद रखने के लिए पुस्तक पढ़ें कि एक बच्चे को बच्चा होने के लिए समय और स्थान की आवश्यकता होती है और यह कि उसे एक ट्यूशन कक्षा से दूसरी ट्यूशन कक्षा में भेजाने से उसका बचपन नष्ट होता है।



स्कूल के वो दिन

प्रज्ञा कुमारी, कक्षा-3 अ
केन्द्रीय विद्यालय ओ0 सी0 एफ0, शाहजहांपुर



शुरू हो गया है रोना
कोई घर में छुप के बैठा
कोई पकड़े बैठा कोना।
थी जिंदगी में रौनक
सब खेल खा रहे थे
अच्छे भले थे सारे
खुशियां मना रहे थे।
स्कूल सब खुले थे
सभी बच्चे स्कूल जा रहे थे
मास्साब जी बिजी थे
एग्जाम करा रहे थे।
फिर यूँ हुआ कि एक दिन
बदलने लगा पल पल ये दिन।
जैसे नज़र लगी हो किसी की
हर कोई देख रहा था ओर उसकी
ये खिलखिलाते मानव खामोश हो गये
स्कूल सारे सूने वीरान हो गये।
चहुँओर एक खामोशी
सबसे बनी है दूरी
अब मास्क ओर दो गज़ की दूरी है जरूरी।
अब याद आ रहे हैं

वो दिन सुबह असेम्बली वाले।
वो सिन भर अस्त व्यस्त रहना
यारो के संग मस्त रहना।
कभी कंप्यूटर क्लास की वो मस्ती
कभी ग्राउंड की शैतानी सस्ती।
थक कर के घर को जाना
जाते ही बेड पे गिरना।
मम्मा का वो लाइ लड़ना
फटी कॉपी देख कर फिर हम पर चढ़ जाना।
अब याद आ रहे हैं
स्कूल के वो दिन
दोस्तो से मिल के जब खिल जाता था तन का तिन
तिन।
जब सबसे मिलके रहते
कितने मज़े थे करते।
लेकिन अभी भी है आशा
धीरज रखो सब जरा सा।
पालन करो नियम का
सहयोग होगा सबका
तो ये वक्रत भी न टिकेगा।
सब्र तो करो रे लाडलो
ये कोरोना भी मिटेगा।

बच्चे

अखंड प्रताप सिंह, कक्षा -12 'ब',
केन्द्रीय विद्यालय आर.आर.सी. फतेहगढ़



आँखे खुलती तो सपने दूर नज़र आते हैं।
शाम होते होते सब सच हो जाते हैं।
छोटी छोटी चीज़ों के लिए माँ बाबा से ज़िद करने वाले
बहुत जल्दी समझदार हो जाते हैं।
बिस्तर पर सोने वाले
अब भारत माता की गोद में सो जाते हैं।
गलियों में शोर मचाने वाले
देश के लिए सरहद पर चले जाते हैं।
अपने देश समाज और परिवार को संभालते- संभालते
हम बच्चे बहुत जल्दी बड़े हो जाते हैं।
बचपन की मासूमियत भी कही गुम हो जाती है।
दोस्तों की दोस्ती भी जिंदगी के संघर्ष में खो जाती है।
जैसे जिस्म से रूह अलग हो जाती है।
लेकिन अपनों के लिए हम अपनों से दूर हो जाते हैं।
सच में हम बच्चे बहुत जल्दी बड़े हो जाते हैं।

जब याद करते हैं वो दिन

तो हर लम्हानज़रों के सामने आता है।

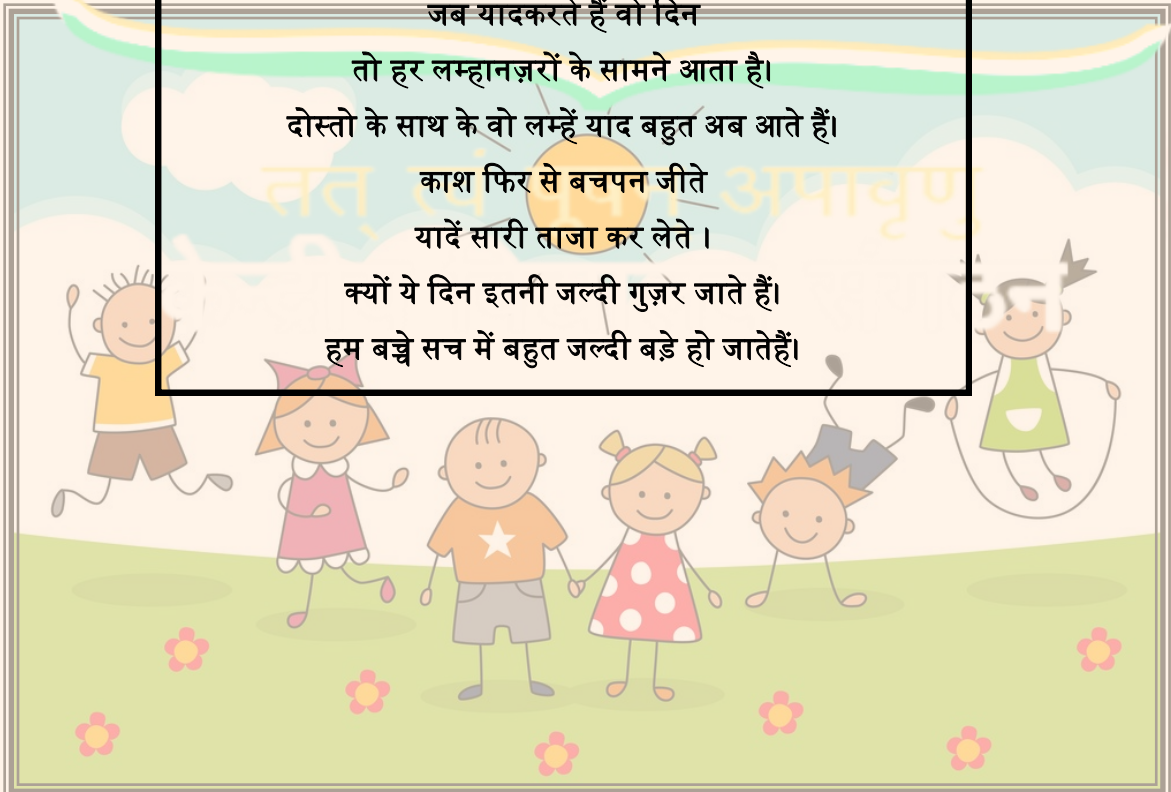
दोस्तों के साथ के वो लम्हें याद बहुत अब आते हैं।

काश फिर से बचपन जीते

यादें सारी ताजा कर लेते ।

क्यों ये दिन इतनी जल्दी गुज़र जाते हैं।

हम बच्चे सच में बहुत जल्दी बड़े हो जाते हैं।



बहुत हुआ ऑनलाइन लेक्चर

सना, कक्षा-8 ब,
केन्द्रीय विद्यालय, फ़ैज़ाबाद कैंट



बहुत हुआ ऑनलाइन लेक्चर,
मां, मैं स्कूल जाना चाहता हूँ।
सिलेबस नहीं देता पूरा ज्ञान,
मैं व्यावहारिकता पढ़ना चाहता हूँ।
लंच बॉक्स दोस्तों से बांटना,
मैं सामाजिकता पढ़ना चाहता हूँ।
गिरकर उठना, फिर दौड़ जाना,
मैं संघर्षशीलता बढ़ाना चाहता हूँ।
खाली पीरियड में गाना-नाचना,
मैं रचनात्मकता बढ़ाना चाहता हूँ।
बहुत हुआ ऑनलाइन लेक्चर,
मां मैं फिर से स्कूल जाना चाहता हूँ।



भताने तनुजा, कक्षा-10 स
केन्द्रीय विद्यालय ए.एम.सी. लखनऊ (द्वितीय पाली)



कोरोना ! कोरोना! कोरोना!
इससे कभी मत डरना
अगर आपको इससे बचना,
तो बार-बार हाथ धोना,
भीड़-भाड़ की जगहों पर मास्क पहनना,
बिना वजह घर से बाहर न जाना,
नाहीं किसी से हाथ मिलाना,
नाही अफवाह पर ध्यान देना,
वरना पड़ेगा सबको पछताना,
सारे त्यौहार घर पर ही मनाना,
रिश्तेदारों का हाल-चाल पूछना,
माता-पिता का ख्याल रखना,
इस पल को परिवार के साथ बिताना,
इसके लक्षण ऐसे है ना,
सर्दी ,खांसी ,बुखार आना,
इस से मत घबराना,
मन अपना शांत रखना,
डॉक्टर से सलाह लेना,
अपने घर को साफ रखना,
इस कोराणा को हराना
हम सबको है इससे जितना,
जरूरतमंदों की मदद करना,
अफवाहों से बचना,
कोरोना के नियमों का पालन करना,
हमको है देश बचाना,
इस कोरोना को है भगाना,
रोज कसरत करना,
अपने तन और मन को स्वस्थ रखना,
हम घर के अंदर,
तो कोरोना बाहर।

घड़ी की महत्ता

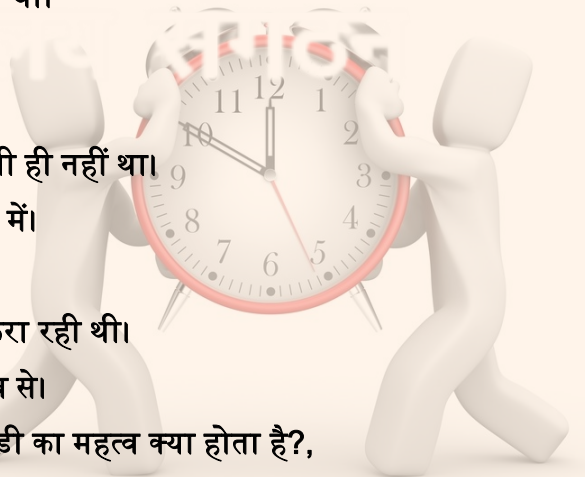
रौनक वर्मा, कक्षा-7 द,

केन्द्रीय विद्यालय नं. 2, ओ.ई.एफ. शाहजहाँपुर



वह घड़ी जिसे हम अपने घर में लगाया करते थे।
वह घड़ी जो हमें समय बताया करती थी।
वह घड़ी जिसे देख कर हम लोग अपना काम किया करते थे।
वह घड़ी जो हमारा काम बनाया करती थी।
वह घड़ी घर में सबसे महत्वपूर्ण थी।
वह घड़ी जो घर में सबका मार्गदर्शक का काम करती थी।
वह घड़ी जिसे देखकर हमें अपना काम याद आता था।
हाय! एक रोज वो घड़ी हो गई खराब।
जो घड़ी सबको मार्ग दिखाती थी,
उसी घड़ी के मार्ग का खुद ही अंत हो गया।
वह घड़ी यूँ खराब हुई कि पुरानी हो गई थी।
उस घड़ी की सुइयां 24 घंटे, सातों दिन, घूमा करती थी,
लॉकडाउन में उनका भी घूमना बंद हो गया।
मित्रों! तुम जिस खराब घड़ी को मामूली समझ रहे हो,
मैं बताता हूँ कि उसकी क्या महत्ता थी।

जिस दिन खड़ी के हाथों की टिक - टिक आवाज बंद हुई,
उसके एक रोज़ बाद मार्गदर्शन ना मिलने के कारण एक विपत्ति का जन्म हुआ।
उस दिन घड़ी सामने ना होने के कारण समय किसी को पता ही नहीं चला।
जाने- अनजाने में भूल हुई कि पानी किसी ने भरा ही नहीं था।
पानी जाने का समय 10:00 बजे था।
किसी को पता ही नहीं चला पानी कब चला गया था।
फिर खोला ढक्कन पानी के जग का तो पाया कि उसमें पानी ही नहीं था।
नहीं किसी ने दिया ध्यान और नहीं था पीने का पानी घर में।
कॉलोनी में फिर से पानी आने का समय 1:00 बजे था।
उस दिन हर पल वह घड़ी हमें अपनी कमी का एहसास करा रही थी।
झटपट दूसरी घड़ी टांगी जिससे ना हो ऐसी समस्याएं अब से।
चलिए, अब मुझे आज्ञा दीजिए। आशा करता हूँ कि एक घड़ी का महत्व क्या होता है?,
आपके समझ में आया होगा।



कोरोना वायरस

वंशिका गंगवार, कक्षा-2 स,
केन्द्रीय विद्यालय आर.आर.सी. फतेहगढ़



अपना रखेंगे ख्याल हम बच्चे हैं तो क्या?
अपना रखेंगे ख्याल हम बच्चे हैं तो क्या?
सुबह उठकर परिवार के साथ हम करेंगे योगा और पीएंगे काढा।
अपना रखेंगे ख्याल हम बच्चे हैं तो क्या?
अपना रखेंगे ख्याल हम बच्चे हैं तो क्या?
अपने दादा दादी अपने मम्मी पापा की लगवाएंगे मिलकर वैक्सीन और हम सब खाएंगे स्वस्थ आहार।
अपना रखेंगे ख्याल हम बच्चे हैं तो क्या?
अपना रखेंगे ख्याल हम बच्चे हैं तो क्या?
हाथों को बार-बार करेंगे हैंडवाश बिना धुले हाथ हम नहीं छुएंगे आंख और नाका।
अपना रखेंगे ख्याल हम बच्चे हैं तो क्या?
अपना रखेंगे ख्याल हम बच्चे हैं तो क्या?
वायरस से बचने के लिए हम नहीं जाएंगे नानी के घरना किसी को बुलाएंगे अपने घर।
अपना रखेंगे ख्याल हम बच्चे हैं तो क्या?
अपना रखेंगे ख्याल हम बच्चे हैं तो क्या?
वायरस से जंग जीतने के बाद हम सब को बुलाएंगे अपने घर और जाएंगे सबके घर।
अपना रखेंगे ख्याल हम बच्चे हैं तो क्या?



कोरोना तुझे हम हराएंगे

सक्षम त्रिवेदी, कक्षा-4,

केन्द्रीय विद्यालय सी. आर. पी .एफ .(प्रथमपाली) बिजनौर, लखनऊ



कोरोना कोरोना क्यूं तू आया,
तेरा आना किसी को ना भाया ,
तूने सब को घर पे बिठाया,
अपनों को कर दिया पराया।

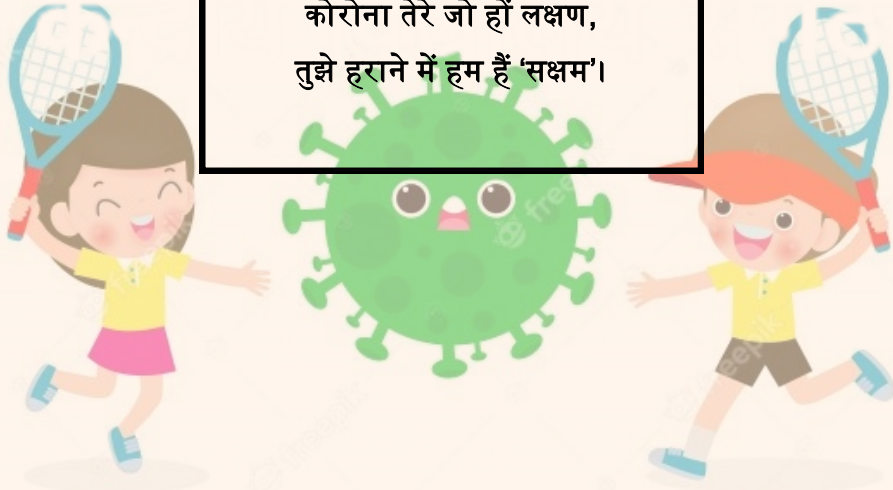
मम्मी हर पल हाथ धुलाती,
सारी दुनिया मास्क लगाती।

दोस्तों से है दूर भगाया,
तूने हमें बहुत सताया।

अब कोरोना तू ही बताए,
कैसे हम अपना दिल बहलाएं?

अच्छे नागरिक बनकर दिखाएंगे,
सारे नियम हम अपनाएंगे,
घर बैठकर तुझे हराएंगे,
हाथ धोएंगे, मास्क लगाएंगे।

कोरोना तेरे जो हों लक्षण,
तुझे हराने में हम हैं 'सक्षम'।



नंदिता मिश्रा, कक्षा-12' स'
केन्द्रीय विद्यालय इफ़को, बरेली



कोरोना वायरस के कारण आज पूरे देश में लॉकडाउन है। सभी लोग अपने-अपने घरों में बंद हैं और वैसे भी इस समय देश की जो स्थिति है, वह चिंता का एक विषय बनी हुई है। इसके बाद दिन-रात सिर्फ कोरोना की खबरें देख कर मन-मस्तिष्क में एक डर व्याप्त हो गया है। हम दिन-रात सिर्फ कोरोना-कोरोना के बारे में सुनते हैं और यह हमारे मन में कहीं-न-कहीं एक नकारात्मकता को पैदा कर रही है। लेकिन इस वायरस से हमें डरना या इस के संबंध में जो जानकारी मिल रही है, उस से हमारे मन में नकारात्मकता को व्याप्त नहीं होने देना चाहिए। ऐसे समय में खुद को सकारात्मक रखना बहुत जरूरी है।

पॉजिटिव सोच रखें

पॉजिटिव सोच हर मुश्किल को आसान बना देती है, बस इसी सोच के साथ आगे बढ़ते जाएं। परिवार के साथ अच्छा समय बिताएं और यह सोचें कि आप इस बारे में सोचते थे कि जब मैं घर पर रहूंगा या रहूंगी तो मैं क्या करना चाहती थी? समय का सदुपयोग करें और अपनों के साथ समय बिताएं।

रचनात्मकता के साथ अपने को जोड़ें

खुद को नई चीजों से जोड़ें। कुछ नया सीखने की कोशिश करें। आप रसोई में जाकर कुछ नया व्यंजन बनाने के बारे में भी सोच सकते हैं। आप डांस वीडियो देखकर डांस भी सीख सकते हैं।

किताबों से करें दोस्ती

हम में से ऐसे कई लोग हैं, जो किताबों के पढ़ने के शौकीन तो रहते हैं लेकिन हमेशा अपना बिजी शेड्यूल होने के कारण वे पढ़ नहीं पाते। इस बात को कहते हुए पाए जाते हैं, तो आप के पास यह सबसे अच्छा मौका है कि आप जो किताबें अपने बिजी शेड्यूल के कारण पूरी नहीं कर पाए थे, उन्हें अब पूरी कर सकते हैं।

मेडिटेशन

मेडिटेशन हमारे मन-मस्तिष्क को शांत करता है और आप के गुस्से को कंट्रोल करता है इसलिए इससे जरूर जुड़ें और रोजाना मेडिटेशन करें।

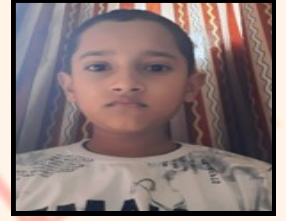




घर पर रह कर फ़िटनेस और वेलनेस

उड़ान

अर्जित सिंह, कक्षा- 6,
केन्द्रीय विद्यालय पीलीभीत



हम सभी को ज्ञात है कि देश आज कोरोना महामारी से ग्रसित है। ऐसे में हमें घर पर ही रहकर अपना ध्यान रखना है। स्वास्थ्य हमारी प्राथिकमता है। हम सभी स्वस्थ होंगे, तभी अपना, अपने परिवार व अपने देश का ध्यान रख सकते हैं। हमें अपने रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाना होगा, जिससे कोरोना महामारी हमें न पकड़ सके। सर्वप्रथम हमें अपने दिनचर्या को नियमित करना होगा। प्रातःकाल जल्दी जागना होगा व रात्रि जल्दी सोना होगा। प्रातःकालीन क्रियाकलाप से निवृत्त होने की बाद सर्वप्रथम हमारा कार्य कुछ शारीरिक गतिविधि व योगाभ्यास करने का होना चाहिए, जिससे हमारा शारीर बीमारियों से लड़ने में सक्षम हो सके।

प्रातःकालीन शुरुआत योगाभ्यास से की जा सकती है, जिसमें अनुलोम-विलोम, कपाल-भाती, भस्तुका प्राणायाम को शामिल किया जा सकता है। इन तीनों को करने मात्र से ही काफी हद तक हम अपने शरीर को रोगों से लड़ने के लायक बना सकते हैं। इन तीनों प्राणायाम को तीस से चालीस मिनट करना भी पर्याप्त होगा। इन प्राणायाम को हर तरह का व्यक्ति करके स्वास्थ्य लाभ ले सकता है।

सूर्य नमस्कार हमारे शरीर को स्वस्थ, मजबूत व फुर्तीला बनाता है। यह एक पूर्ण आसन है, जो हमें स्वस्थ रखने में हमारी सहायता करता है। आज हम अपने घर पर ही स्पॉट रनिंग यानी खड़े खड़े अपने स्थान पर दौड़ना, स्पॉट जंपिंग यानी खड़े-खड़े अपने स्थान पर कूदना, दंड बैठक लगाना आदि कर सकते हैं।

इसके साथ ही हम शारीरिक गतिविधि में छोटी-छोटी जगह का प्रयोग कर सकते हैं। हम छोटी जगह में शटल रेस कर सकते हैं, रस्सी को कूद सकते हैं, सावधानीपूर्वक जीने पर चढ़ व उतर सकते हैं, हाथों को गोलाकर घुमाना आदि अन्य कई गतिविधि को कर सकते हैं।

इसके साथ ही हमको अपने आहार का ध्यान रखना भी अनिवार्य है क्योंकि यह हमारी दैनिक कार्यशैली को प्रभावित करता है। हमें कम तला हुआ हलके भोजन को प्राथमिकता देनी होगी। हरी सब्जी, अंकुरित अनाज, दूध दही को नियमित रूप से अपने भोजन में शामिल करना होगा साथ ही अपनी प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए हम गिलोय व तुलसी के रस का काढ़ा का सेवन कर सकते हैं।

अपनी उचित दिनचर्या नियमित योगाभ्यास व उचित खान-पान के द्वारा हम इस कोरोना काल में अपने शरीर को स्वस्थ, मजबूत, व फुर्तीला बना सकते हैं व अपनी, अपने परिवार की व अपने देश की सेवा कर सकते हैं।

चिट्ठी

कार्तिक, कक्षा-10,
केन्द्रीय विद्यालय पीलीभीत



अपना आंगन घर की देहरी,
बरबस छोड़ी अपनी मिट्टी।
कितनी मीठी लगती थी तब,
मात-पिता की भेजी चिट्ठी॥

नयन ताकते थे डाकिया,
काश कोई पाती आ जाए।
मेरे अपनों का विदेश से
कुशल संदेशा तो ले आए॥

अपनों की जब याद सताती,
गीली अंखियाँ तब हो जाती।
धैर्य बँधाने का एक साधन,
कितनी अनुपम थी वह पाती॥

पत्र ना आता जब अपनों का,
गुम हो जाती सिट्टी-पिट्टी।
दर्द भरे उर लेप लगती,
अपनी - उनकी प्यारी चिट्ठी॥

बदरा, कागा सुनले भैया,
अमृत की पिलवा दे घुट्टी।
व्याकुल हैं अपनों के उर अब,
जल्दी ले आ उनकी चिट्ठी॥

जीतने की अभिलाषा

वंशिका त्रिपाठी, कक्षा-5,

केन्द्रीय विद्यालय सी.आर.पी.एफ. बिजनौर, लखनऊ



कठिन बहुत है समय मगर ना टिक पाएगा
बीतेगी यह रात, सवेरा फिर आएगा ।
सागर की अचूक तरंगों का है कहना ,
चढ़ना, गिरना , गिरकर चढ़ना ही है जीना ।
उत्कंठा हो जिसके मन में विजय प्राप्त की ,
करता वह संघर्ष अनवरत भांति भांति की ।
गिरता ग्राफ कोरोना का यह बतलाता है ,
डरता ना हो वही सिकंदर कहलाता है ।
खुशियां और उमंग अथाह आज जन मन में,
जीत रहे हैं , जीतेंगे , आज विश्वास है मन में ।
चेहरे पर हो मास्क और दो गज की दूरी ,
और समय पर टीका लेना बहुत जरूरी ।





प्रकृति

कुमारी कौशकी यादव, कक्षा-5 स
केन्द्रीय विद्यालय, लखनऊ कैंट



हरे-हरे खेतों में
बरस रही हैं बूंदें
खुशी-खुशी ले आया सावन
भर गया मेरा आंगना
ऐसा लग रहा है जैसे
मन की कलियां खिल गईं जैसे
ऐसा कि आया बसंत
फूल हुए कुछ मलंग।
धूप से प्यासी इस धरा को
बूंदों ने दी ऐसी अंगड़ाई
कूद पड़ा मेरा तन-मन
मन पर ऐसी मस्ती छाई।
यह संसार है कितना सुंदर
लोगों ज़रा ध्यान करो,
हाथ जोड़ करती निवेदन।





मुझे इस दुनिया में रहना है

उड़ान

जतिन प्रकाश, कक्षा-9 स

केन्द्रीय विद्यालय, आर.डी.एस.ओ. लखनऊ

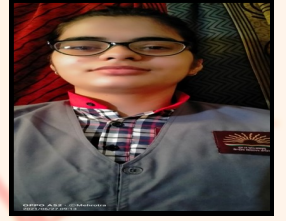


मेरे यारों!

मेरा बस यही कहना है,
मुझे इस दुनिया में रहना है।
सब की यादें जुड़ी हैं इस दुनिया से,
सबका मन जुड़ा है इस दुनिया से,
इसलिए मेरा बस यही कहना है,
मुझे इस दुनिया में रहना है।
मेरी बात तो सुन लो मेरे यारों,
इस प्रकृति को तुम तो
ना मारो,
क्योंकि मेरा बस यही कहना है,
मुझे इसी दुनिया में रहना है।
यह दुनिया कहां जा रही है,
इस दुनिया को लालच ही क्यों भा रहा है,
इसलिए मेरा बस यही कहना है,
हमें इस दुनिया को बचा कर रखना है।

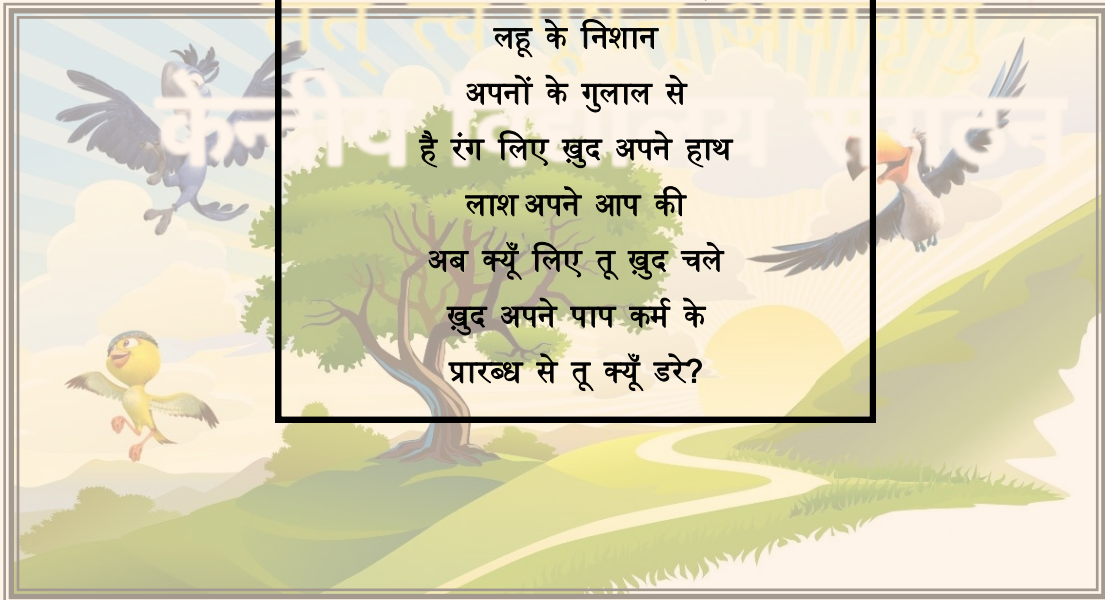


अर्पिता मेहरोत्रा, कक्षा-12 स,
केन्द्रीय विद्यालय माती, कानपुर देहात



जल्द ही
ज्ञात हो तुमको ये
हो अगर अज्ञात तुम
अज्ञान के अंधेरो में
हो अगर संलित तुम
जाग तुम अब देखो ये
भाग सकते तुम नहीं
साया तुम्हारे कर्म का,
कर्म के प्रारब्ध का
देख तेरी राह में,
है क्यूँ खड़ा उस राह पे
जिस पे करे संताप तू
है तेरे पाप कर्म ये
प्रारब्ध से तू क्यूँ डरे?
छोड़ के तू आन मान
ले चला तू झूठी शान
खोखली सी नींव पे
कच्चे खड़े तेरे मकान
दीवार की दरारों से बहते

लहू के निशान
अपनों के गुलाल से
है रंग लिए खुद अपने हाथ
लाश अपने आप की
अब क्यूँ लिए तू खुद चले
खुद अपने पाप कर्म के
प्रारब्ध से तू क्यूँ डरे?





मेरे वतन के लिए एक संदेश !

नीलम सोलंकी, कक्षा- 9

केन्द्रीय विद्यालय इफ्को आंवला बरेली

उड़ान



मेरा वतन, अपने विशाल सीने में हज़ारों ख्वाइशों को हर रोज़ पनाह देता है,
मेरा वतन, अपने गर्भ में उम्मीद सुरक्षा मीठी-सी ममता की छाँव देता है।
मैं निकल पड़ी जो जिंदगी के सफरनामा को नापने,
मेरा वतन मुझे हौसला-ए-बुलंदी की चाह देता है।
है यही वो रास्ते जहाँ मैंने कदम दर कदम चलना सीखा,
लिखना पढ़ना दोस्ती प्रेम वात्सल्य की ओट में जीना सीखा,
है यही वो जगह जहाँ खुद का एक घरौंदा बनाया,
कभी उठ कर कभी चोट खाकर तिनके-तिनके से उसे सजाया॥
क्या हुआ है मेरे वतन को जो गलियां कुछ उदास हैं
तकती हैं राह अपनों की थोड़ी बुझी थोड़ी निराश हैं
फैला जो सन्नाटा दिल बैठा-सा जाता है
जहाँ दौड़ती थी सरपट गाड़िया वहाँ अब खालीपन पसरता है॥
इस वतन ने हर बार गिरकर उठना सिखाया है
कभी सरल कभी कठिन हर दिन को पार कराया है
यह लौट के वापस आएगा, फिर से वही रौनक लाएगा
उंगली पकड़ कर चले थे जिसकी वह सम्भलना भी सिखाएगा॥
यह ऐलान वतन का है हम मिलकर इसे निभायेंगे
जिस लगन से वतन बनाया है अब शिद्दत से उसे बचाएंगे
क्या हुआ जो कुछ पल ठहर गए, बस वक्त है ये जो गुजरेगा
लड़कर बाजी जो निकलेंगे तो जीत का परचम लहरेगा॥
गलियां फिर से खिल जाएगी और बच्चे धूम मचाएंगे
हम फिर निकलेंगे स्कूल की ओर और किस्से नए बनाएंगे
फिर से त्योहार आएंगे फिर से होगी वो चहल पहल
चाय मैगी और समोसे वही ठहाके वही जुगल॥
ढलते सूरज की लौ हैं, आज, कल नई धूप-सा चमकेंगे
आस भी है विश्वास भी है, कि फिर से हम सब दमकेंगे
ऐ वतन तुम थम के रहना हम तुम्हें वह वक्त लौटाएंगे
जीवन जो तुमने दिया, ये वादा रहा सजाएंगे॥

चल पड़ी पतंग

मृत्युंजय पटेल, कक्षा- 3
केन्द्रीय विद्यालय पीलीभीत



धागे से जब जुड़ी पतंग,
हवा में उड़ पड़ी पतंग,
धीरे- धीरे चुपके- चुपके
आसमान पर चढ़ी पतंग।
इसको काटा उसको काटा,
आपस में खूब लड़ी पतंग,
धागे के बंधन से कट के,
आसमान से झड़ी पतंग।
आओ आओ लूटें उसको,
वो देखो वो पड़ी पतंग,
पतंगबाज के हाथ में जाकर,
फिर उड़ने चल पड़ी पतंग।





होती थी पहले जब गर्मियों की छुट्टियाँ

उड़ान

श्रीदर्शी, कक्षा-7

केन्द्रीय विद्यालय IVRI, बरेली



होती थी पहले जब गर्मियों की छुट्टियाँ, बड़ा मज़ा आता था,
न जाना पड़ेगा स्कूल, नानी के घर जाने का इंतज़ार रहता था।
लग जाते थे सभी के कपड़े सूटकेस में, छुट्टियों के दो दिन पहले
दिन, घंटे, उंगलियों पर गिनते,, मन में सजते थे सभी से मिलने सपने
होती थी पहले जब गर्मियों की छुट्टियाँ, बड़ा मज़ा आता था।
सुबह-सुबह हम खेतों में जाते, बातों-बातों में मीलों चल जाते
जब आते लौटकर घर तो पीने को मिलती ठंडी-ठंडी लस्सी
होती थी प्रतियोगिता, सब में कौन पिएगा ज़्यादा,
इस चक्कर में पेट पूरा भर जाता।
सिलसिला खेलने का कभी ख़त्म नहीं होता था,
कभी आम के पेड़ पर बैठकर बंसी बजाते, तो कभी
बागों में पेड़ों के बीच खेलते थे लुक्का-छुप्पी।
होती थी पहले जब गर्मियों की छुट्टियाँ, बड़ा मज़ा आता था।
सारा दिन खेल-खेलकर जब हम थक जाते,
नानी की कहानियाँ सुनते-सुनते जाने कब हम सो जाते
घर में लगता जैसे गर्मी की छुट्टी है या कोई त्यौहार है,
सभी के मन बरसता एक दूसरे के लिए प्यार है।
होती थी पहले जब गर्मियों की छुट्टियाँ, बड़ा मज़ा आता था।
मगर दो सालसेन जाने लगी नज़र किसी की,
हम बच्चों की मस्ती पर,
कोरोना ने तो करदी सबकी छुट्टी,
स्कूल बंद,
सब खेलना बंद,
सब का घर पर आना-जाना बंद,
इस बार न जाने कब छुट्टियाँ बीत गईं,
घर पर रह जाने में,
न कोई आया, न हम जा पाए, अभिलाषाएं सब रह गयी केवल मन में।
होती थी पहले जब गर्मियों की छुट्टियाँ, बड़ा मज़ा आता था।

दो घड़े

सिद्धांत सिंह, कक्षा-5,
केन्द्रीय विद्यालय पीलीभीत



एक घड़ा मिट्टी का बना था, दूसरा पीतलका। दोनों नदी के किनारे रखे थे। इसी समय नदी में बाढ़ आ गई, बहाव में दोनों घड़े बहते चले। बहुत समय मिट्टी के घड़े ने अपने को पीतलवाले से काफी फासले पर रखना चाहा।

पीतलवाले घड़े ने कहा, "तुम डरो नहीं दोस्त, मैं तुम्हें धक्के न लगाऊंगा।"

मिट्टीवालेने जवाब दिया, "तुम जान-बूझकर मुझे धक्के न लगाओगे, सही है; मगर बहाव की वजह से हम दोनों जरूर टकराएंगे। अगर ऐसा हुआ तो तुम्हारे बचाने पर भी मैं तुम्हारे धक्कों से न बच सकूंगा और मेरे टुकड़े-टुकड़े हो जाएंगे। इसलिए अच्छा है कि हम दोनों अलग-अलग रहें।"

शिक्षा - जिससे तुम्हारा नुकसान हो रहा हो, उससे अलग ही रहना अच्छा है, चाहे वह उस समय के लिए

एक कहानी

रौनक यादव

केन्द्रीय विद्यालय शिवगढ़,
रायबरेली



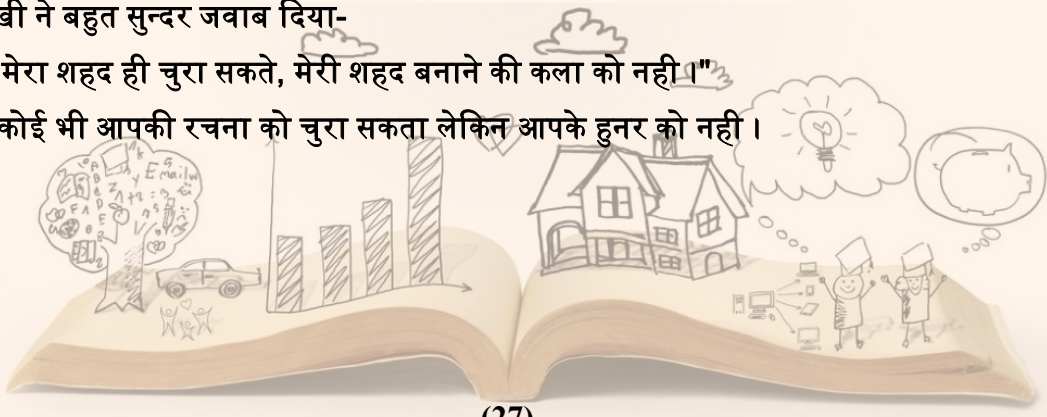
एक चिड़िया ने एक मधुमक्खी से कहा-

"तुम इतनी मेहनत से शहद बनाती हो और इंसान आकर उसे चुरा ले जाते हैं, तुम्हें बुरा नहीं लगता।"

मधुमक्खी ने बहुत सुन्दर जवाब दिया-

"इंसान मेरा शहद ही चुरा सकते, मेरी शहद बनाने की कला को नहीं।"

सीख - कोई भी आपकी रचना को चुरा सकता लेकिन आपके हुनर को नहीं।





LEARNING AND CELEBRATIONS

उड़ान

BHAVYAA VERMA, CLASS-8 A,
KENDRIYA VIDYALAYA BKT LUCKNOW

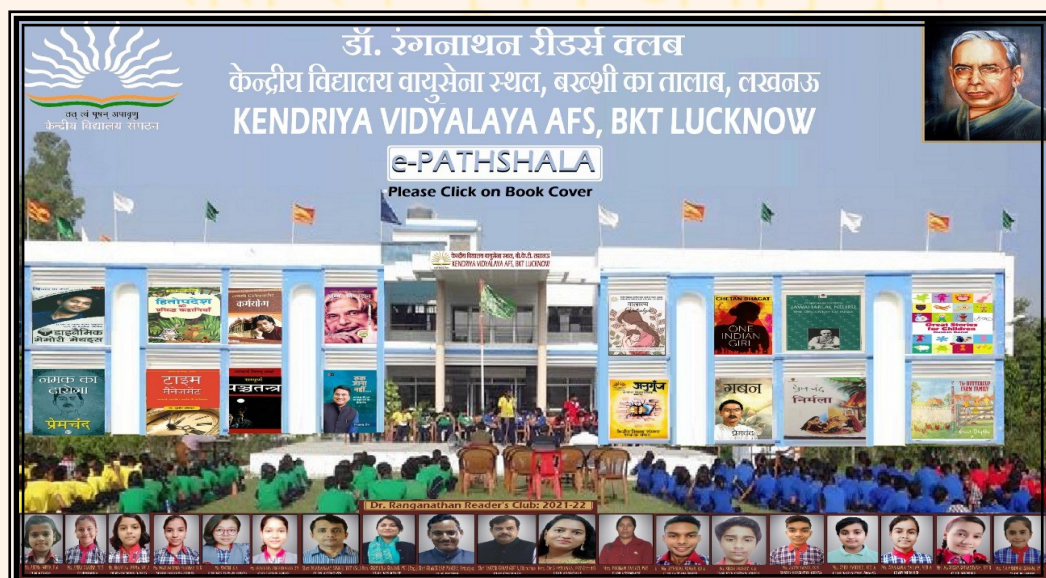


I ,Bhavyaa Verma, a student of class VIII 'A' of Kendriya Vidyalaya, Bakshi Ka Talab, had a special summer vacation this year and want to share my unique experience with you all through this brief write-up.

Like every year this year also our summer vacation started from the first week of May. Earlier I used to go to my father's place of posting to spend my vacations. But this year due to the on-going situation of covid-19, we were not allowed even to step outside the house. We were getting bored because we were in this situation since last one year. But Our library teacher Mr. Rakesh Kumar Gupta Sir formed a Ranganathan's Readers Club for organizing various online competitions. I was more excited as I was appointed as an executive member of this club.

Every day a new competition was being organized among the two groups viz; Primary group and Secondary group. The winners of each competition in each group were also awarded with e-certificate. All the students enjoyed in participating in the online competitions. Many competitions like fastest finger first for various types of quiz, Mother's Day celebration, Father's Day celebration, International Milk Day, International Yoga Day, World No Tobacco Day, International Environment Day, Sports Day (indoor games), International Cycle Day, Family week celebration were organized by this club. Family week was organised for our family members and relatives. In one of the competitions i.e. poster making competition, me and my mausi both stood first. Not only this, various types of e-books were also provided through our WhatsApp group by this club which were very useful in improving our knowledge.

I feel indebted and thankful to our Principal Sir Mr. Ghanshyam Pandey and our Library Teacher Mr. Rakesh Kumar Gupta because they made our vacation not only special but also knowledge giving. We learnt to answer the questions quickly and correctly and gained a lot of knowledge due to this club only. I will never forget this summer vacation in my whole life.





"BIRD FEEDER"

उड़ान

PUSHPANJALI PRINCY, CLASS-12 B
KENDRIYA VIDYALAYA, RRC FATEHGARH



A blissful morning starts with the rising of the sun and chirping of birds. These enchanting colorful creatures bring us in harmony with '*Mother Nature*'. India has a proud possession of 867 bird species but their number is declining catastrophically. Approximately 80% of Indian bird species population decline has been recorded in the past five years.

A question arises, what we can do to save them as we are the one who have destroyed their natural habitat and have brought them on the verge of extinction.

Birds are the indicators of how healthy our *Environment* is. A decline in their number is an alarm that must wake us up!

I thought of feeding birds during this summer season; many of which die of hunger and thirst. I made a '*BIRD FEEDER*' for them where their food and water is kept.

This is my small step towards Environment Conservation under the guidance of my Physics teacher Miss Meenu Rana.

Seeing the birds come and peck on the grains has become a part and parcel of my life. It makes both of us happy and contented.





GOD AND SMOKE

उड़ान

APRAJITYAGYA SAINI, CLASS - 10 B
KENDRIYA VIDYALAYA LUCKNOW CANTT



A man who was the only survivor of a terrible shipwreck was washed ashore on a tiny uninhabited island. Marooned and alone, the man cried out to God to rescue him from his terrible fate. Unfamiliar with survival tactics, the man struggled to endure.

Eventually, he was able to construct a hut to protect him and his few possessions. Every day the man faithfully scanned the horizon for the answer to his prayer. One day, after scavenging for food, he arrived home and found his little hut burning to the ground. There was nothing left but ashes and smoke. "God, how could you do this to me!!" He cried. Broken and despaired he sobbed himself to sleep.

The next day, he was awakened by the sound of a ship. It had come to rescue him. He asked the sailor, "How did you know I was here?" "As we were heading East, we saw your smoke signal," the sailor replied.

Lesson : God is working in our lives, even in the midst of our pains and sufferings. We easily get discouraged when things are going bad. But take heart and remember... next time your little hut is burning to the ground. It's just a smoke signal that attracts God's blessings.

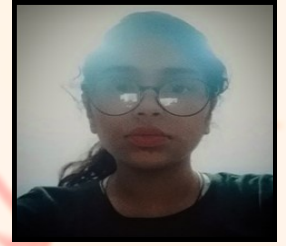




RETURN TO HOMELAND

AISHWARYA RAJ SINGH CLASS-10 A
KENDRIYA VIDYALAYA NO.2, JLA
BAREILLY CANTT

उड़ान



The day my dad got appointed as Cultural Director in The Embassy of India, Tehran, Iran, I was excited to no limits as it can be understood that the excitement of going to a foreign country for a whole 3 years is inexplicable in words.

Years passed with memorable friendships, sweet memories, place of extreme paradise all captured in my eyes... It was Monday when my dad returned from Embassy of India and gave the alarming news of going back to India within five days as it was an urgent order by the MINISTRY OF FOREIGN AFFAIRS, that being the last flight before the international flights were to close down due to the pandemic.

There was mixed feeling of, happiness and sadness, joy and despair, worry and excitement, all blue-black feelings. If provided to choose among the sadness of leaving a place and joy of going to your motherland, one cannot really understand which is stronger.

But I agree with these lines by Sir Walter Scott:

“Breathes there the man, with soul so dead,
Who never to himself hath said,
This is my own, my native land!
Whose heart hath ne'er within him Burn'd,
As home his footsteps he hath Turn'd,
From wandering on a foreign strand!”

So, we started from Tehran and surprisingly the Imam Khomeini International Airport was not much exciting as it always used to be for me. We were to maintain social distancing; no friends could hug each other for the last time the moment of pain and parting.

After passing the immigration counter, the fascinating shops of jewellery, Cafes, restaurants, and many other exciting shops were all closed due to the pandemic. Not only for the kids but also for the adults; great last-minute-gifts purchases at the airport are always exciting.

We were to travel through a connecting station... Dubai {UAE}, and change our plane. The flight from Tehran crossed over the deserts and plateaus and The Persian Gulf giving me a change of scene as if to say good bye. Most interesting view was watching small ships sailing in the gulf.

When we started from Tehran the temperature was 11-degree Celsius but landing in Dubai it was 36 degrees. I could understand the role of latitudes affecting the climate.

Travelling has always been exciting for me, but there was something different in the air during the days of travelling during the pandemic. We were to travel through connecting stations. All lounges appeared to be like medical dispensaries or hospital corridors, filled up with gloved and masked people. So was the journey, sober and serious without fun, except peeping out at the troubled earth, from the window of the plane.

Finally, me and my family arrived at the Delhi airport. Firstly, we had to suffer the painful COVID test. After the completion of all the formalities at the airport which took a round of 3 hrs, we booked the taxi and headed home.

It was a relief to find our Indian people cheerful and confident and even unafraid of the pandemic. Their belief in God and fate saved them of the anxiety and depression. But their over-confidence and negligence regarding masks, physical distancing and hygiene was too alarming for us. My father started sermonizing to all. Lockdown was imperative, although our cities looked so dull and desolate. Sitting at home, I was wondering when we shall get the normal times back, and another enjoyable journey abroad.



HORROR MOVIE PARANOIA

BIPASANA BHATTACHARYA CLASS-9 D,
KENDRIYA VIDYALAYA , IIT KANPUR

उड़ान



I woke up early that day: sweaty and breathless. As my brain restarted slowly it dawned on me there as on for my discomfort. I smiled in relief. “Post horror-movie paranoia,” I muttered to myself. “Nothing uncanny about that.” A several minutes more and I were on my way to the breakfast table, having bathed and dressed and completed all the necessities. My parents had gone to accompany my brother on some exam of his. The house- I realized suddenly, while gulping down some hard pieces of bread, was eerily silent. I shook my head. “It’s all post-horror movie paranoia.” I repeated to myself, sternly. Depositing my plate at the basin, I trudge off to my study room and dropped my mathematics book on the table.

A few polynomial long divisions would put a stop to all this nonsense. Midway into factorizing a cubic polynomial I stopped, frowning. Why was I feeling so hot? I glanced up at the ceiling. Ah, the fan. Today’s the first of April and it’s already as hot as in June, I thought as I got up to switch on the fan, global warming must really be—and that’s when I heard a strange sound- like a muffled sneeze. A familiar feeling of fear seized me. “Ma! Baba! Are you there?” No answer. “Post horror movie hallucinations,” I muttered, pretty sure ‘hallucinations’ hadn’t been part of the original mantra. I sat down again at the study table, fidgeting about with my pencil box, wondering on my next course of action when I noticed that the fan was off again. My heart now thudding with real fear, I walked stiffly and cautiously to the switchboard. “Post horror movie hallucinations,” repeated my mind, wildly, “Post horror movie- “, I froze in front of the switchboard. I could hear footsteps outside; I was sure I could hear them. I slammed the door shut, trying to keep my head. “It’s all silly imaginations,” suggested a part of my brain. “But, what if it’s not?” suggested the other. Only the way to find out. I grabbed my steel water bottle, wondering if a blunt weapon would be any good against a ghost, swung the door open again, and hoping I had not gone out of my mind, and braced myself.

There was no one outside. Treading cautiously, I looked around myself like those shady characters in spy movies, feeling increasingly stupid. Had I really been imagining the whole thing? As if on cue, I spotted a reflection beside my own on a nearby picture frame, and before the scientific part of my brain could contemplate the enormity of this very unscientific revelation, I swung around with my steel water bottle raised, and came face to face with my brother.

“What”-I spluttered, trying to make sense out of this anti-climax, “But I thought- “ “April Fool!” announced my brother, cheerily, and obviously that was when I realized the relevance of today’s date. “I hid in the bathroom,” he explained “Kept switching the fan off and you didn’t even notice! Mom and dad have gone for a morning walk; the story of the exam was a trick too! You made a complete fool of yourself!” he grinned, apparently pleased at the thought. What followed was a torrent of verbal abuse from my end that I shall not go into, but the point is that this incident effectively put a stop to my post horror movie paranoia, and I realized that those undead spirits, time-travelers, aliens, or whoever they are who make a living out of traumatising people on Earth, couldn’t possibly be doing for anything a prank.





THE COVID PHASE

YAMINI SINGH
CLASS-12 B, KENDRIYA VIDYALAYA
NER, BAREILLY

उड़ान



I am Yamini Singh of class 12th B.

I've always been interested in writing poetry but due to lack of time & busy schedule of studies I rarely get time for this hobby. Presently due to pandemic prevailing everywhere & lockdown I got a lot of time for extracurricular activities so I utilised the time to compose a poem "THE COVID PHASE". I think whatever happens in life is due to some reason so, we should always think positive & keep looking for ways to move forward in our life. I wrote this poem expressing my experiences about the COVID times. I hope that the readers will be encouraged to face problems of life with a positive vibe through this poem.

Roads are empty with only few there,
Marriage halls are vacant enjoying 50 rare.
Funerals are even more Mournful with only
twenty to cry,
Because a Monster's out there causing every-
one's throat dry.
Coughing and sneezing, damaged lungs are
threat,
People catching excessive fever resulting
weakness and sweat.
Doctors and nurses are our brave Frontline
workers,
Working day and night to act as people's serv-
er.
The only way to get rid from this defacing,
Cheer up your confidence with proper social
distancing.
Cover up your mouth and nose with the mask,
To save your life is an important task.
No children are there in the garden and Park,
Everyone is alone in the home, surrounded by
the dark.
Students are forced to study online,
Otherwise they may get COVID and have to

Wash and sanitize before you touch,
To keep yourself safe, do this much.

Practice Yoga and eat veggies,
Enhance your immunity and forget
worries.

Grow and grow more plants and purify air,
Follow the covid-19 guideline rules here
and everywhere.

Go out only when there is an emergency,
Excuse me please! Don't forget to sanitize
your currency.

Spend more quality time with your family,
Cause only then everyday seems to be
lovely.

Listen stories from your granny,
She has the treasure to tell you many.

Never give up learning with time,
Just to have and keep your mind fine
Deaths are decreasing, recoveries in-
creasing,

Which is indeed pleasing

Finally vaccines are here, get the shot,
Remember the safety lessons, govern-





SUMMER VACATION

**SIDDHANT SRIVASTAVA, CLASS- 9,
KENDRIYA VIDYALAYA I.V.R.I BAREILLY**

उड़ान



My name is Siddhant Srivastava. I study in class 9 in KENDRIYA VIDYALAYA I.V.R.I BAREILLY. And today I am going to share some memories of my summer vacation 2021. We all know that our country is badly gripped by COVID-19 pandemic for the last 2 years. So, to stop the spreading of this virus in our country, the central government has decided to impose lockdown, country-wide .This time we were not able to go out of the station during our summer vacation but still we had our share of enjoyment and learning.

Our summer vacation started and we were not happy about it because we had already lost so many lives in the corona pandemic in 2020. We were all packed within four walls of our house the whole year but it is also true that we had learnt so many activities in 2020. Such as we started to help our mother with some necessary household chores like washing clothes, making food or interesting dishes at home like pizza, chole kulcha , dal makhani , panipuri etc

Our online classes were running but there was nothing like school learning. After some time I really started to miss my school. I was missing my friends and my honourable teachers .our online classes had started but the cameras were put off. We were not able to see our classmates. So, I missed my classmates very much.

I celebrated international tree plantation day at my home. My father brought around 10 different types of decorative as well as eco friendly plants like neem , bonsai, palm etc . I along with my family members planted them on roof of the house and enjoyed it like never before .This really turned out to be a memorable one.

So, I enjoyed the Summer vacation in a very different and enriching way.





LOCKDOWN

उड़ान

NIVEDIKA SHARMA, CLASS- 12 B,
KENDRIYA VIDYALAYA NER, BAREILLY



I Nivedika Sharma, student of class XII B of KV NER want to share my experience on covid19 lockdown.

Initially I was very depressed, but later I realized that lockdown had given me more time to do the things I loved to do.

I started drawing, writing, spending time with my family. I kept myself busy and away from negativity by doing work I love. Lockdown helped me to enhance my creativity..

I have written this poem sharing my experience of lockdown.
And literally I can say that I had a wonderful experience.....

It is a shock
When whole India is locked.
No party, no gathering, no wedding,
It's all boring.
But spending time with family,
Makes my day lovely.
No noise, no pollution,
Everything is like pure solution.
Home schooling is best,
But, I am distressed.
No teachers, no cully,
I miss them all dearly.
Now the end is near,
I let out a cheer.
No home schooling, no new corona cases,
I am very happy to see their faces.

तत त्वं पूषन् अपावृणु !





UNEXPECTED MOTIVATION

उड़ान

**ABDULLAH USMANI, CLASS- 11,
KENDRIYA VIDYALAYA BARABANKI**

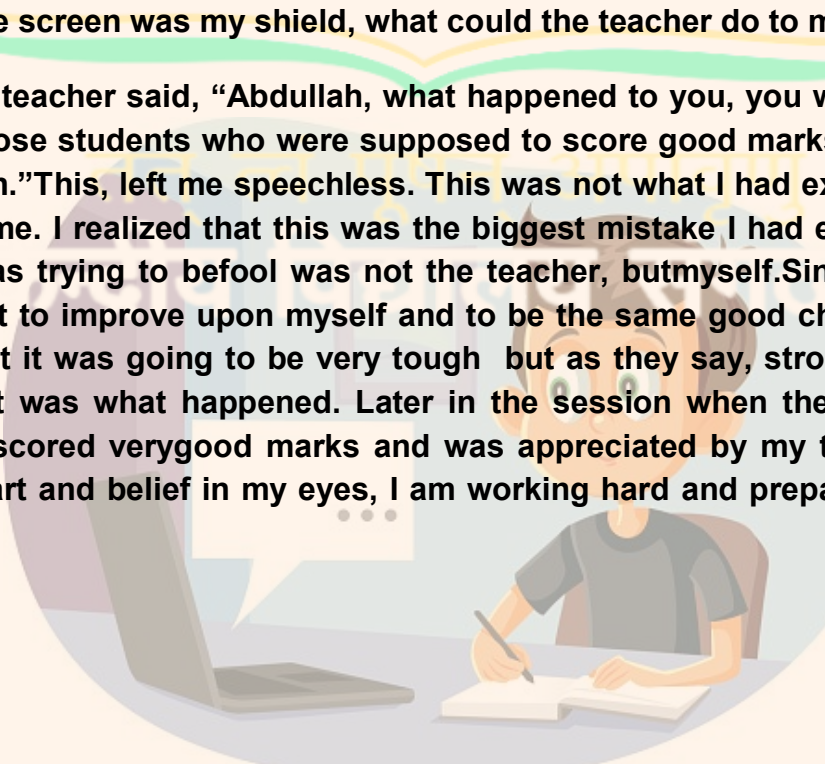


COVID 19, the most dangerous word of my life till date and years to come (I Pray), will be remembered in the words of Charles Dickens, as “The worst of time and in the most unique unintended ways, the best of times.” For me as a student the challenge was to maintain the pace of my learning. Virtual platforms were introduced, I was excited to try them but being a teenager it was difficult for me to focus on my studies, and that too when I had a mobile phone in my hand with all liberty to use. Even if I would use it for a day continuously no one would say anything to me because they considered it being used for my studies. In the initial days I started spending my days scrolling through social media, watching shows etc. but not doing what it was primarily given for.

One day during my online class my teacher asked some questions to all the students who were attending the classes regularly. But most of the time I used to just mute my mike and let the class run “In background.” It was a common practice adopted by most of the students during online classes . That very day ,my teacher started asking a few questions to our class, and almost everybody was able to answer ,barring a few like me. My teacher, surprised, asked each of us the reason for not being able to answer such easy questions that had already been discussed in the class. In the back of my mind, I somewhere or the other knew, that my inability to answer the questions was a result of all the times I had just scrolled through my phone and hadn’t taken my studies seriously. At that very moment, My teacher called out my name “Abdullah” and said “Unmute your mike”.

I smirked, the screen was my shield, what could the teacher do to me ?

But then, my teacher said, “Abdullah, what happened to you, you were never like this. You were one of those students who were supposed to score good marks, and probably answer every question.” This, left me speechless. This was not what I had expected. The teacher’s lines touched me. I realized that this was the biggest mistake I had ever committed and also the person I was trying to fool was not the teacher, but myself. Since that day, I have been trying my best to improve upon myself and to be the same good child. Somewhere inside me, I knew that it was going to be very tough but as they say, strong belief can move mountains and that was what happened. Later in the session when the half yearly exams were conducted, I scored very good marks and was appreciated by my teachers. And now, with faith in my heart and belief in my eyes, I am working hard and preparing myself for the next move.

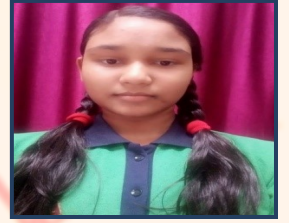




THE BIRTHDAY CHILD

VEDANSHI VAISH, CLASS- 9 B,
KENDRIYA VIDYALAYA SITAPUR SHIFT II

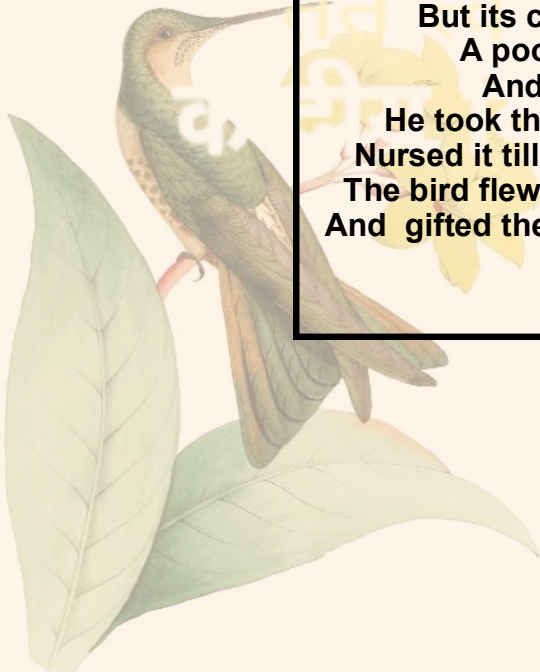
उड़ान



Everything's been different
All the day long.
Lovely things have happened,
Nothing has gone wrong.
Nobody has scolded me,
Everyone has smiled.
Isn't it delicious,
To be a birthday child?

THE THANKFUL BIRD

Once there was an injured bird
But its cry no one heard,
A poor farmer saw,
And he said Oh!
He took the bird to his home,
Nursed it till the injury was gone.
The bird flew when it became well,
And gifted the farmer a box of jewel.





NATIONAL EMBLEM OF INDIA

SUYASH CHANDRA TRIPATHI, CLASS- 9 C,

KENDRIYA VIDYALAYA GOMTINAGAR, LUCKNOW

उड़ान



The National Emblem of India holds a special place in both the history and the present of India. The symbol exudes pride, confidence, power, and courage. The Emblem is adapted from Ashoka's Lion Capital situated at Sarnath. The day it got adopted is also historic, as it was officially adopted on the day India became a republic, January 26, 1950. Currently, the symbol is kept at Sarnath Museum in Varanasi since 1910. The Emblem is preserved with special care at specific conditions of temperature (200-240 °C) and humidity (45-55%) and is guarded with tight security by the skilled police force of Uttar Pradesh.

Significance

The National Emblem commands high respect and is used only for official purposes and events of national importance. It appears on all Government's official letterheads, Indian currency, and passports. It is the official seal of the state governments, the President and our country.





DEAR CORONA VIRUS
DRASHYAVEER TOMAR, CLASS-6 B
KENDRIYA VIDYALAYA, B.K.T.,LUCKNOW

उड़ान

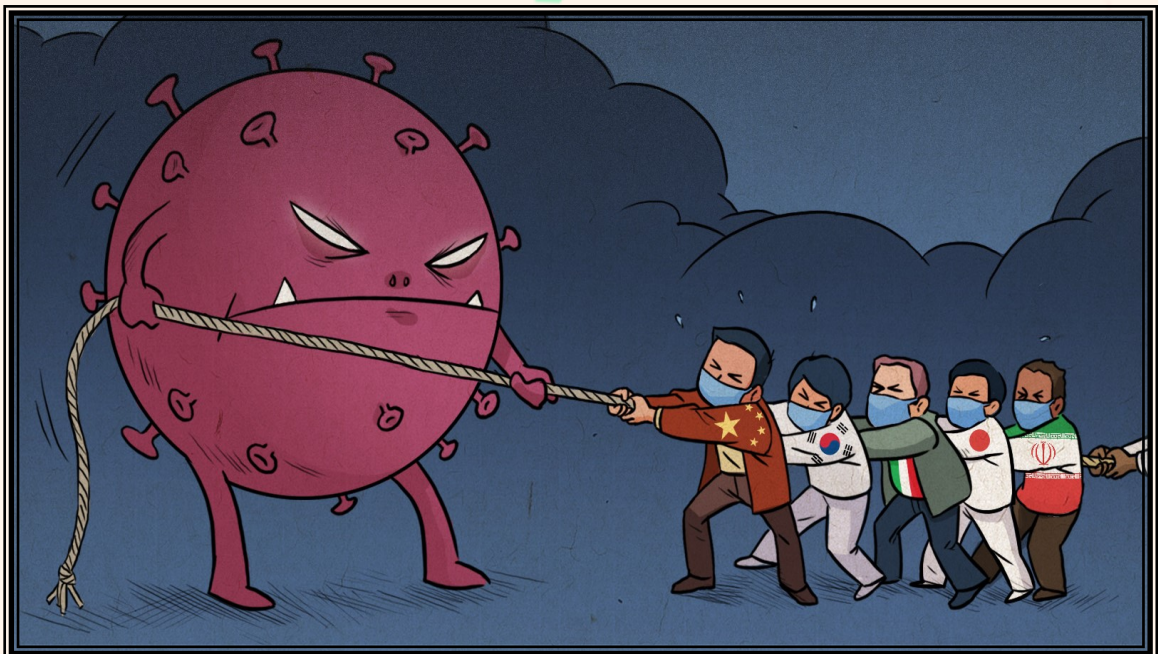


Don't you miss your mother when
You're out there on the roam?
Don't you ever get lonely and tired
and want to go back home?

Don't you have to work hard
To make people feel sick and sad?
Don't you think it's cruel to make us ill,
Weak, infirm and altogether bad?

Please, Corona virus!
Please, for God's sake!
Don't you think it's time for you
to take a little break?

Do you have to mess up everything?
Do you have to be so naughty?
Tomorrow is my birthday.
And I wish to have a party.





FOLK PAINTINGS OF INDIA

उड़ान

HARSH DUBEY, CLASS- 9 C
KENDRIYA VIDYALAYA, RDSO LUCKNOW



Ancient Indian folk painting and art styles have been passed down from generation to generation, and are still practised in different parts of the country. Here's a look at what makes 10 of these folk art forms unique.

Passed down from one generation to another, Indian folk art is still alive in many parts of the country. Being culturally diverse and distinct, a variety of art forms have evolved over the years; some untouched by modernisation, some adapting to new paint colours and materials. Each depict religious epics or Gods and Goddesses mostly, but they're all unique, admirable and inimitable in their own might. In the days of yore, they were made with natural dyes and colours made of soil, mud, leaves and charcoal, on canvas or cloth – giving it a sense of antiquity, vintage nostalgia. Here's a look at 10 folk painting forms that are still practiced in select parts of the country.

There are 10 types of folk paintings in India.

1. Madhubani painting

Also called Mithila art, it originated in the kingdom of Janak (Sita's father in Ramayana) in Nepal and in present-day Bihar. It is one of the most popular Indian folk arts, practiced mostly by women who wanted to be one with God. Characterised by geometric patterns, this art form wasn't known to the outside world until the British discovered it after an earthquake in 1930's revealed broken houses with Madhubani paintings. It mirrored the work of Picasso and Miro, according to William G. Archer. Most of these paintings or wall murals depict gods, flora and fauna.



2. Miniature painting



These paintings are characterised by its miniature size but intricate details and acute expressions. Originating in the Mughal era, around 16th century, Miniature paintings are influenced by Persian styles, and flourished under Shah Jahan and Akbar's rule. Later, it was adopted by Rajputs, and is now popularly practiced in Rajasthan. As with other art forms, the paintings depict religious symbols and epics. These paintings stand out as humans are portrayed with large eyes, a pointed nose and a slim waist, and men are always seen with a turban.

3. Phad painting

Originating in Rajasthan, Phad is mainly a religious form of scroll painting depicting folk deities Pabuji or Devnarayan. The 30- or 15 feet-long canvas or cloth that it is painted on is called phad. Vegetable colours and a running narrative of the lives and heroic deeds of deities characterise these paintings.



4. Warli painting

Originated by the Warli tribes from the Western Ghat of India, in 2500 BCE, this is easily one of the oldest art forms of India. It is mainly the use of circles, triangles and squares to form numerous shapes and depict daily life activities like fishing, hunting, festivals, dance and more. What sets it apart is the human shape: a circle and two triangles. All the paintings are done on a red ochre or dark background, while the shapes are white in colour.



5. Gond painting

Characterised by a sense of belonging with nature, the Gondi tribe in Madhya Pradesh created these bold, vibrantly coloured paintings, depicting mainly flora and fauna. The colours come from charcoal, cow dung, leaves and coloured soil. If you look closely, it is made up of dots and lines.

6. Kalamkari painting

Literally meaning 'drawings with a pen', Kalamkari is of two types in India: Machilipatnam, which originates from Machilipatnam in Andhra Pradesh and Srikalahasti, which originates from Chittoor in the same state. While the former refers to block-printed form of art, the latter is a free flowing art with a pen on fabric.



7. Tanjore painting



From down South, Tanjore or Thanjavur paintings originated in 1600 AD, encouraged by the Nayakas of Thanjavur. You can recognise a Thanjavur painting by its use of gold foil, which glitters and lends the painting a surreal look.

8. Cheriya scroll painting

Originating in present-day Telangana, this dying art form is practised by the Nakashi family only, where it has been passed down for many generations. The tradition of long scrolls and Kalamkari art influenced the Cheriya scrolls, a much more stylised version of Nakashi art.



9. Kalighat painting



A recently discovered painting style, it originated in the 19th century Bengal, from Kalighat. It was the time when upheaval against the British was a possible, exciting idea. These paintings, on cloth and pattas, at first depicted Gods and Goddesses, but then took a turn towards social reform. With cheap paper and paint colours, squirrel hair brushes and colour pigments, the art was characterised by flawless strokes, brushwork, and simple but bold drawings.

10. Pattachitra painting

A cloth-based scroll painting from Odisha and West Bengal, these paintings with sharp, angular bold lines depict epics, Gods and Goddesses. Originating from the fifth century in religious hubs like Puri and Konark, around the same time that sculpturing began, considering there was no known distinction between an artist and sculptor back then.





THINKING POSITIVE

ESHANI PATEL, CLASS- 12,
KENDRIYA VIDYALAYA PILIBHIT

उड़ान



Thinking makes a man what he wants
If you think you are sad, you are
If you think you are beaten, you are
If you think you are alone, you are
If you think you are neat, you are
If you think you are happy, you are
If you think you are enjoying, you are
If you think you are someone, you are
If you think you have support, you have
Have thinking of good and
Well being and have faith in yourself
You can do whatever you imagine.





THE GIRL NAMED "HELEN"

उड़ान

SOUMYA TIWARI, CLASS- 12,

KENDRIYA VIDYALAYA, GOMTINAGAR, LUCKNOW



The girl named "Helen "
Was with many disabilities,
But the way she lived her life
Was unique than those of her bes-
ties.

Her guide Miss Sullivan
Met her when she was six,
She changed her like magic
Her destiny was fixed

Love towards the nature,
She learnt from her teacher.
She could feel every object
And communicate with every crea-
ture.

What great thinking she had
She fought with all her problems,
Everyone was worried about her
future
Which she made awesome.

Her curiosity for knowledge
Made her more and more perfect,
She did things
Which no one could expect.

Then she became a great writer,
She was as sharp as a knife,
Let's appreciate her courage of
writing
About herself in "The story of my
life"

The greatness of her story
Was the happiness of her mentor,



VALUE OF TIME

ANUSHKA SAXENA, CLASS- 10 A,
KENDRIYA VIDYALAYA, RRC, FATEHGARH

उड़ान



Time is the most valuable thing on Earth. It cannot be compared with anything. Everything depends on time in this world. For doing something, some time is needed. If we do not have time, then we have nothing. Wasting time is considered as the worst thing on Earth because wastage of time destroys us and our future. We cannot regain the time that we have wasted. Some people give more importance to money than time. However the truth is that: nothing is more valuable than time.

We can only utilize the time; no one can buy or sell time. Most of the people live their life meaninglessly. They only utilize their time in gossiping with their friends, in playing, in eating and in performing other lazy activities. In this way they spoil many years. They never think about what they are doing, how they are doing etc. They don't even realize how, in wrong way, they are wasting their time. We should learn from the mistake of others and get inspired with the success of others. We must utilize our time in doing something useful so that time gives us prosperity and not adversity.





HEAL THE PLANET

उड़ान

PALAK, CLASS- 10,
KENDRIYA VIDYALAYA PILIBHIT



Sustainable Development offers the world a plan for saving the earth. Although the idea is simple, the task is substantial. Our Earth is granted to us by our forefathers which is so unique, well developed and ideal. Everything was in its best form. The nature includes the beautiful mountains, seas, oceans, rivers, valleys and the greenery. All are quite pretty and the compulsion is to keep the beauty intact and give it to our next generation as we got it in its best condition. We have to give it on rent to the coming generations. Basically the sustainability is concerned with 3 E's which are-

1. Equality
2. Environmental Integrity
3. Economic Efficiency

The international economy should provide a supportive international climate for achieving environment and development goals by-

1. Promoting Sustainable development through trade liberalization.
2. Making trade and environment mutually strong.
3. Encouraging macro-economic policies conducive to environment and development.

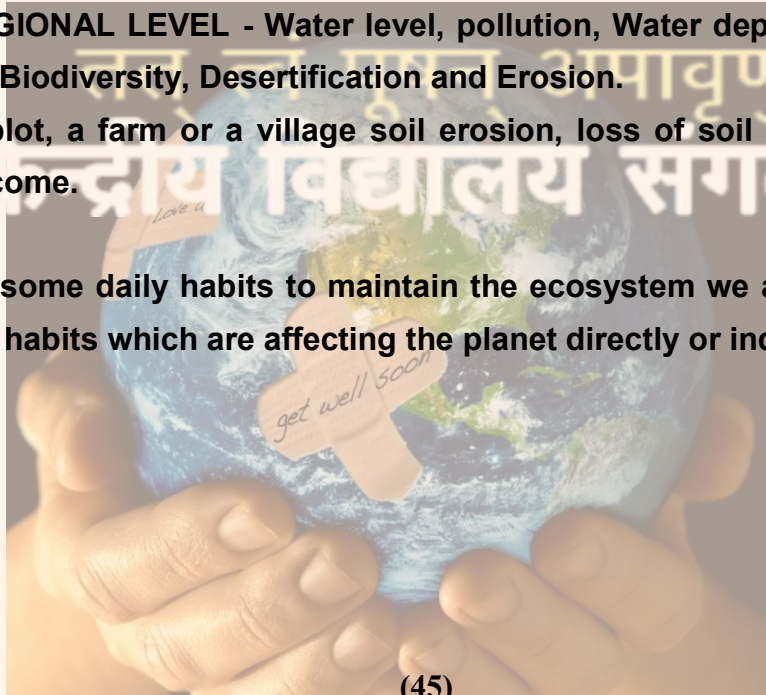
Sustainability issues are to be analysed at various levels-

GLOBAL LEVEL - Ozone depletion, Climate change and Air pollution

NATIONAL AND REGIONAL LEVEL - Water level, pollution, Water depletion, Deforestation, Fisheries depletion, Biodiversity, Desertification and Erosion.

LOCAL LEVEL - a plot, a farm or a village soil erosion, loss of soil quality (chemical or physical), loss of income.

We have to acquire some daily habits to maintain the ecosystem we are living in and also remove some of our habits which are affecting the planet directly or indirectly.





EXPERIENCE DURING LOCKDOWN

उड़ान

ANUSHREE SINGH, CLASS- 12 C,
KENDRIYA VIDYALAYA, ALIGANJ, LUCKNOW

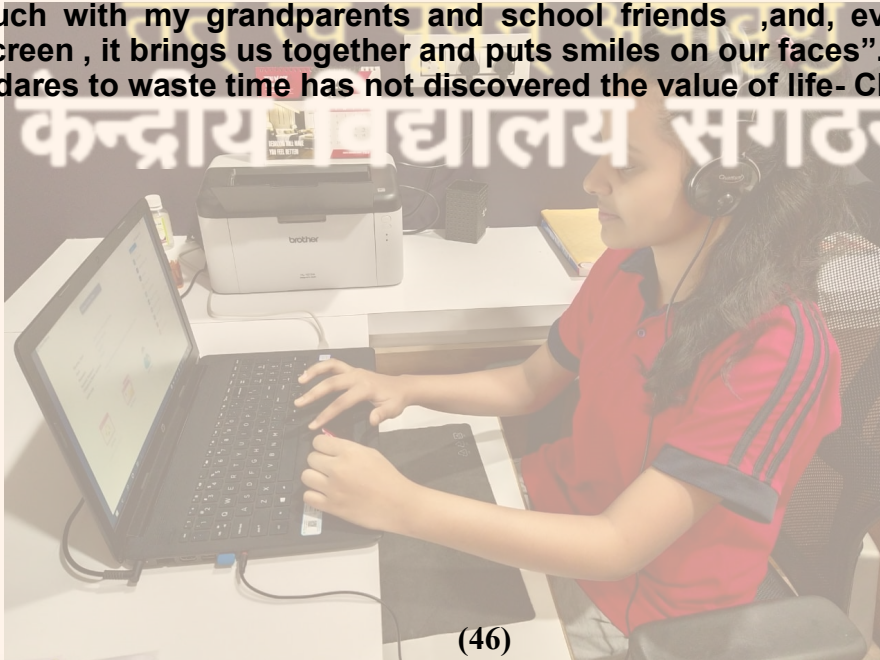


“I longed for the day when I could stay at home and my parents did not have to go to work, so that I could spend some quality time with my family members, little did I know that my wish , very soon would come true but with some upheavals.” Although it did, I found myself wondering if it was blessing in disguise? Since the lockdown was imposed and we were confined within walls , I have grown to appreciate school more than ever before. It was a very stressful time for me ,as, being a class 12th student , I always had examination fear and horror which school could have helped me to overcome . These untoward days have given me a chance to realise that going to school is truly an opportunity; to be able to walk to school and talk to classmates and teachers and ask them about their well being. Through physical presence we have an occasion to sit in a classroom lesson and learn new and interesting things everyday, Something I miss now.

As every coin has its pros and cons so does the lockdown. Locked inside, now I get enough time for self study in peaceful environment at home . I did go through some difficulties in the beginning as our online classes and tests were going on. Finishing work within the allocated time span, saving the document, accidentally deleting it or not being able to type in the required field were all common issues at the beginning of our online learning. During lockdown the presence of family really helped me emotionally and mentally. My parents and my younger brother were closest to me during that difficult time. We all were together at home that provided me calmness and serenity.

I also significantly improved my cooking skills and learned some basic recipes from my mother as she had enough time, free from her office work for some days. But ,During online classes on Google meet /Zoom there was fun also, as students were physically present in the class but not mentally .Sometimes ,when teacher used to ask questions , they used to keep mum and silent. After sometime, the reply used to be heard “madam there is network problem at my place, you are not audible to me” and trust me, this used to be one of the funniest moments during online classes. Also, not to forget, “Thanks to modern the technology which has enabled me to be in touch with my grandparents and school friends ,and, even if it is just through a screen , it brings us together and puts smiles on our faces”.

A man who dares to waste time has not discovered the value of life- Charles Darwin





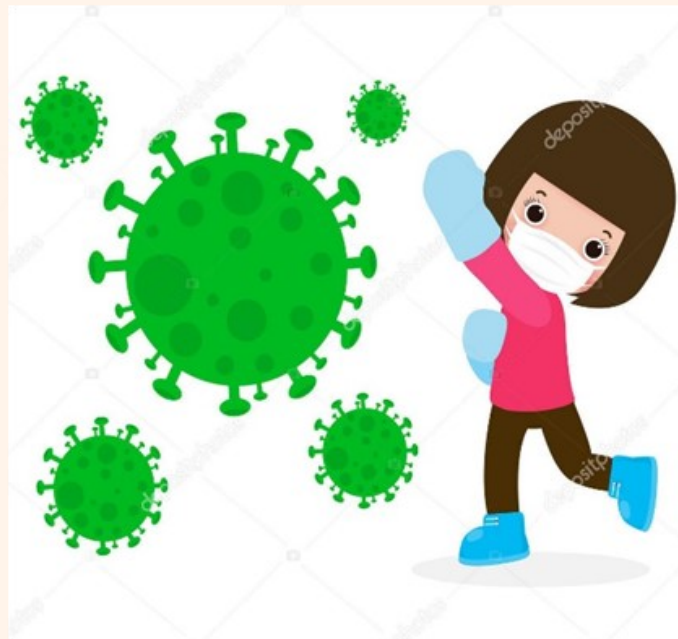
REVENGE OF MOTHER NATURE

**ANIKET SINGH RATHORE, CLASS- 3 D,
KENDRIYA VIDYALAYA R.R.C. FATEHGARH**

उड़ान



Corona virus had infected
our planet,
Let's join our hands together
to fight it.
There are no medications
for it,
Wear mask, maintain social distancing
to remain safe from it.
Stay at home for your benefit,
follow government's guidelines
and fight against it.
People kill animals, eat cat and bat,
Let's quit this habit as
it is really bad.
Corona is the revenge of mother nature,
so learn from your mistakes
for your better future.





TIME MANAGEMENT TIPS

MUNIS SHAFIQ, CLASS- 12 A,
KENDRIYA VIDYALAYA IFFCO, AONLA

उड़ान



Everyone has the same duration in a day, i.e. 24 hours every day at our disposal, yet some succeed while some don't. That is because those who succeed have learned the trick of utilizing their time to the utmost. This is a skill, often referred to as time management among the students.

By putting the following tips in this article into practice, you'll become more focused and less stressed. You'll have more time to do meaningful things outside of school too!

1. Study in stretch of 50-60 minutes for more productivity.
2. Try Pomodoro technique:-Set a timer for 25 minutes and study till it runs out.
3. If you don't understand a concept, speak to your teacher about it right away.
4. Keep a list of every single thing you have to do for the rest of day.
5. Restrict usage of social media.
6. Create a schedule for each day of the week, e.g. when you'll exercise, relax, study, spend time with family.
7. Determine when you are the most productive, do your hardest assignment during that time.
8. Remove every distraction from your study table.
9. Get 7 hours of sleep every night.
10. Before every class, take a few minutes to skim through notes of previous class. This way you will learn more from what's being taught.

Time management is the key to success. Laziness brings nothing in life. Therefore, time management should be made a habit from the very beginning. The students should be well aware about the need and importance of time management in our life. It helps a student to complete all the tasks on due time with success.





JUST FEEL

**DIVYANSHI, CLASS- 12 A,
KENDRIYA VIDYALAYA CRPF, BIJNAUR LUCKNOW**

उड़ान



**Feel the early bright sunshine and the sounds of
Chirping birds in the morning,
Stating that “love lies in small things”.**

**Feel the high pitched sound of the cricket in noon,
Reminding you that “you would reach the
success destination soon”.**

**Feel the dripping sound of rain in the
Messy rainforest during eve,
Advising you that “bring your WISDOM
wherever you live.”**

**Feel the warm wavy atmosphere of autumn,
Urging you that “nothing is small and useless
even the dried leaves at your bottom.”**

**Feel the stillness of moons and stars
at serene night,**

**Making your mind to be in peace
With all your enemies after having a
Long history of fight.**

**So just feel the phases
Of your days,
Cause they would definitely make
Your way RIGHT AWAY!!!
So just FEEL... ;)**



WALKING LANES OF LOCKDOWN

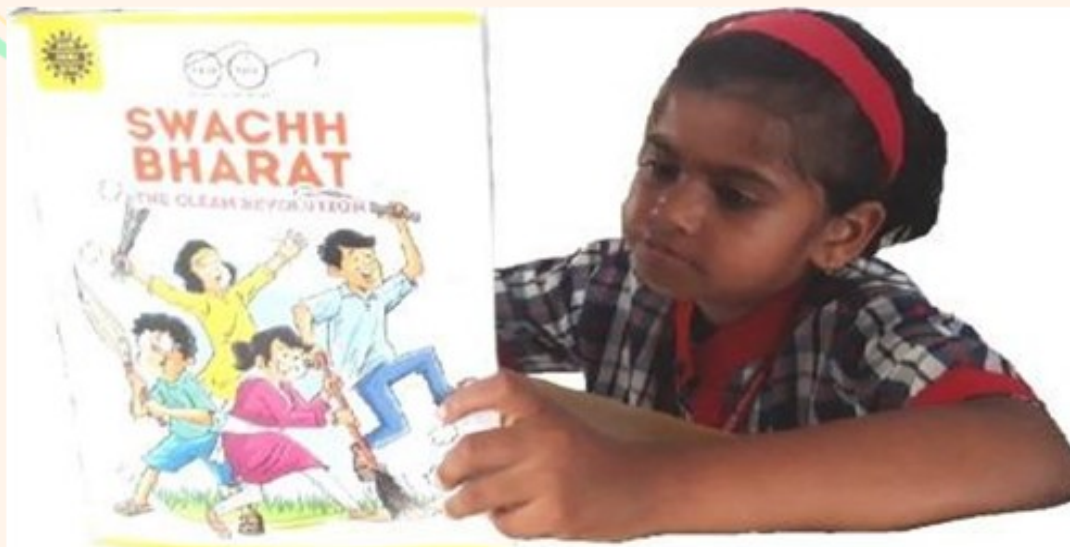
उड़ान

**KHUSHI, CLASS- 10 A,
KENDRIYA VIDYALAYA BKT, LUCKNOW**



Even though this year was drenched and devastated with the COVID-19 and we couldn't go anywhere out to spend our vacation, this summer vacation was the best, I've ever had. Why? Our school organised a summer camp for the kids. This turned out to be a real fun. Many kinds of activities were conducted like quiz, painting competition, general knowledge questionnaire, etc. And to make it even more meaningful, it had one episode titled 'family week' which aimed to involve the family members and provide them some relaxation from covid talk and trauma, our family members thoroughly enjoyed taking part in the competition. Many students' relatives won too and found it really a break from the monotony exercise.

The best thing about it was that every child who won the certificate received it online within 24hrs, which motivated other students to take part. We, the badge holders of the Ranganathan Reading Club were the ones who conducted the quizzes/questionnaire so it made the students more comfortable to take part. I was really impressed by how our sangathan tried the best to make our summer vacation productive. At last but not least, I really liked my summer vacation.





BE RESPONSIBLE

उड़ान

JANHVI SINGH, CLASS-12 A,

KENDRIYA VIDYALAYA, IFFCO AONLA, BAREILLY



Yes, mark it, we are taught from our very childhood to be responsible, but how many of us have followed it whole heartedly, most of us have the answer "NO".

Yes, that's the problem with many of us. We never care to learn whatever our elders suggest us. So, a question arises why we never care to do so. We get influenced mostly by what is happening around us and how others are behaving. On the one hand everyone asks us to be responsible and to do our work with a sense of responsibility. But do they really practice what they preach?

The answer is an emphatic, "No." Sometimes, the elder siblings don't complete their work in the given time. Also, parents sometimes don't do their work with responsibility, (father doesn't attend calls from office, mother delays in cooking food). These are just a few examples.

We grow up seeing all these, and we tend to follow their footsteps that when they don't do what they say, why we should do it. But at the same time we see millions of good things which we don't learn.

Without much thought processing we often blame the government for slow development of the country, blame elders for not listening to what we say, blame teachers for not being all-rounder in every field, blame our surroundings very easily, but do we ever care to think that, surroundings are what we have made them. We pursue excellence in every particular area of our interest or aptitude through hard work alone. We need to attend to our immediate duties and responsibilities and grow to be responsible and useful citizens to make the society and nation great in the true sense of the term.

What's more? It's the time now to be responsible and committed to our family, society and country.

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

LOVE YOU ALL

TANU GAUTAM, CLASS- 10 D,
KENDRIYA VIDYALAYA, RRC FATEHGARH



Thank You for all that you do.
You are the real heroes of this country,
And we value every single effort of yours to save every life.
Love you all!

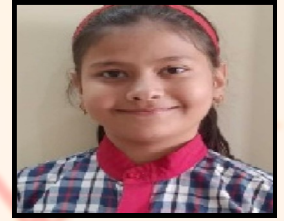




ONLINE SUMMER CAMP

**AVIKA SHARMA, CLASS 6-B,
KENDRIYA VIDYALAYA, AFS BKT, LUCK-
NOW**

उड़ान



An interesting online Summer Camp was organized by Dr. Ranganathan Readers Club of KV AFS BKT during this Summer Vacation from 24th May 2021 to 19th June 2021. The camp, besides other activities, primarily focussed on organizing Quizzes on various subjects by Quiz Masters under the guidance of our respected sir Mr. Rakesh Kumar Gupta. The Quizzes were in two levels, primary and secondary . I also got the opportunity to play a vital role as a Quiz Master for the primary classes.

All the students were invited to participate in the Quizzes. All the students who had participated in the online quizzes were happy and excited to play it online. Some of them requested to conduct the quiz again and again. All the winners of the quizzes were given certificates. Quizzes included variety of questions such as MCQs with four options, Rapid fire Test and MCQs with two options. I was also very excited to play the role of a Quiz Master. It was a chance for me to develop the knack of public speaking and presentation.

The last week of the camp was family week, a different of its kind. In this particular week, all the parents and relatives of the students were allowed to participate. They too, enjoyed very much during the camp and thanked the school for honouring the position holders by distributing certificates. This camp was, undoubtedly, a memorable one and a great learning experience for me.







Aakriti Verma- XII D (Second Shift),
KV Gombi Nagar, Lucknow

Aakriti V.



ANKITA, KV CRPE, LUCKNOW



Topic - WORLD
Environment Day

NAME - VIRASCHANDRA
Class - 9
II - Shift





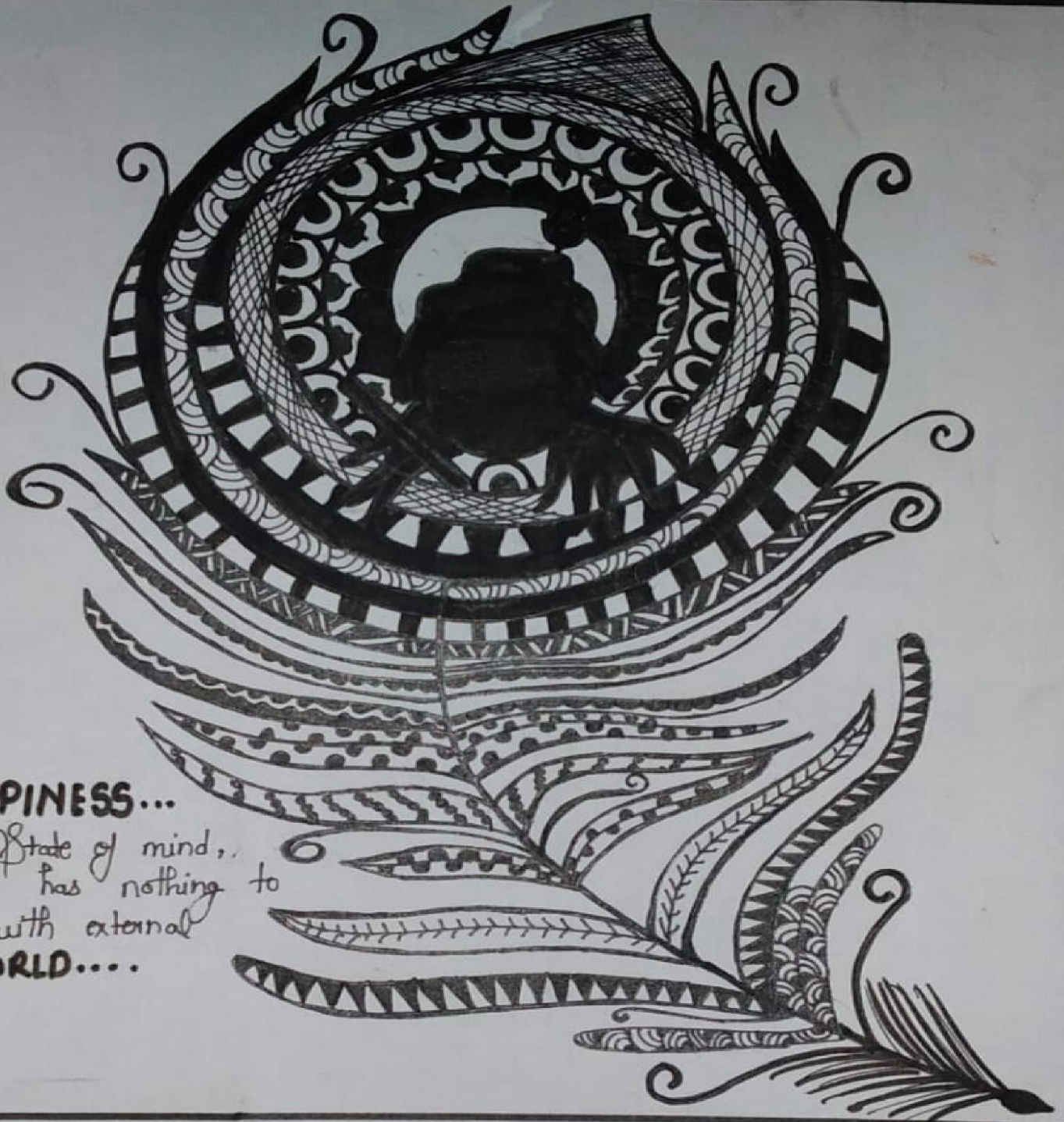
STUDY

ONLINE
CLASSES

CREATION

PARTH SINGH





HAPPINESS...

Is a state of mind,
that has nothing to
do with external
WORLD....



STU. PROFILE

NAME:- ANANYA SACHAN :-

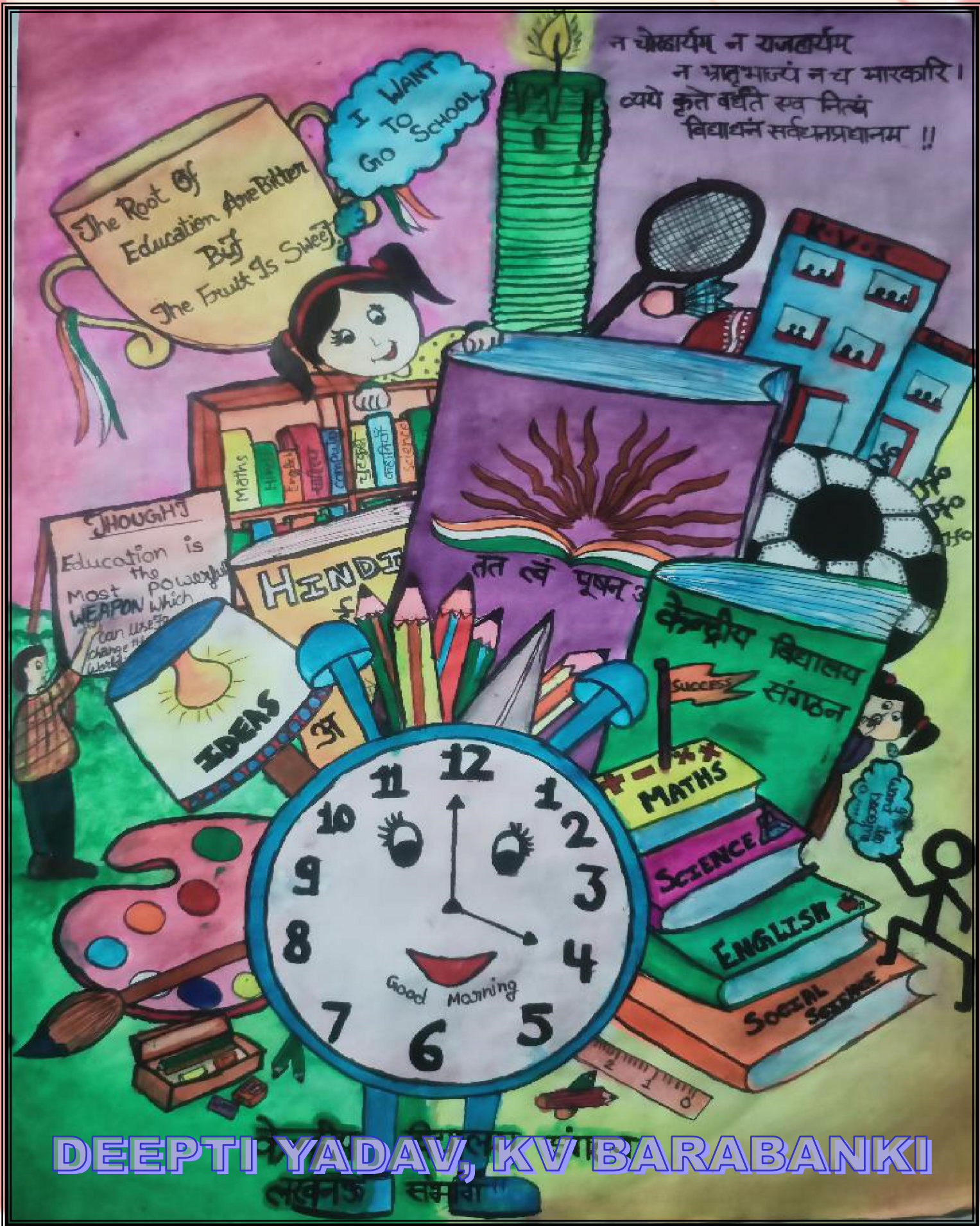
CLASS:- 8th

SECTION:- B

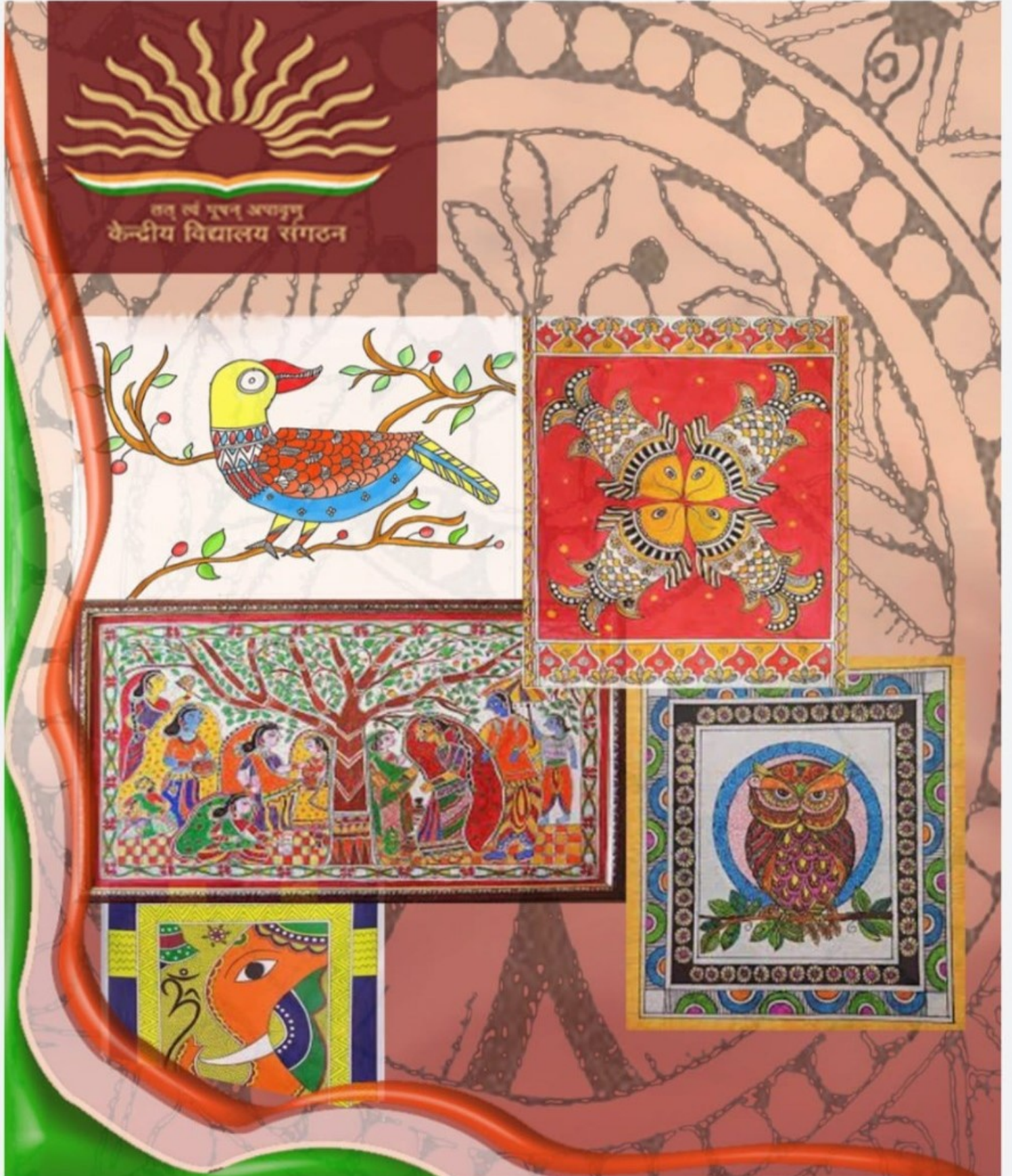
HOUSE:- TAGORE

SCHOOL:- KENDRIYA VIDYALAYA MATI

KANPUR DEHAT. 1st SHIFTE



DEEPTI YADAV, KV BARABANKI



Vishwam Srivastava IX A

KV G Nagar Sh-2



उड़ान

केंद्रीय विद्यालय दिलकुशा कैंट, लखनऊ

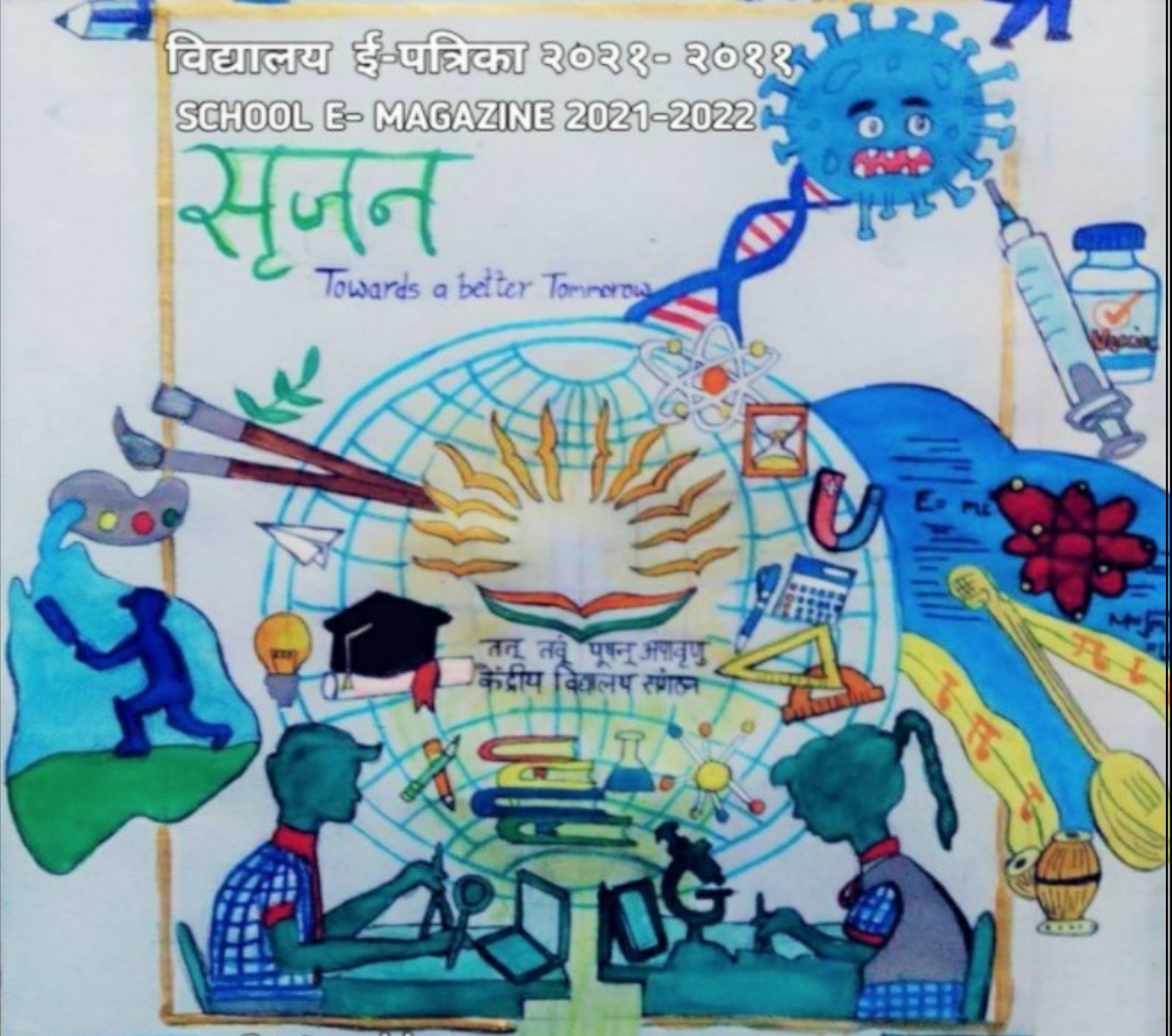
Kendriya Vidyalaya Dilkusha
cantt, Lucknow

विद्यालय ई-पत्रिका २०२१-२०२२

SCHOOL E- MAGAZINE 2021-2022

सृजन

Towards a better Tomorrow



तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केंद्रीय विद्यालय संगठन

Designed by:

Vaishnavi Tiwari

class IX -B

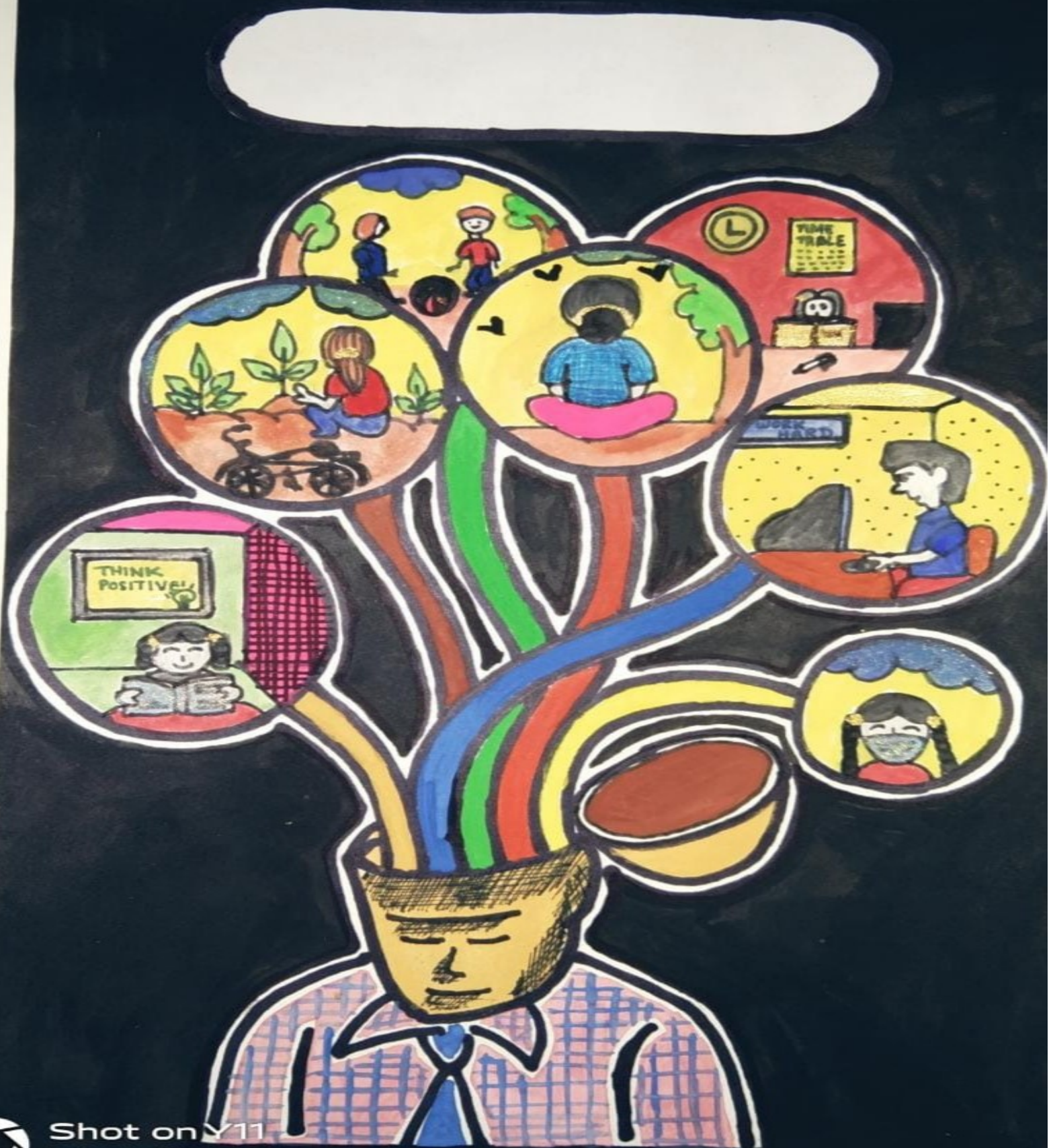
KV Dilkusha cantt, Lucknow





Aditi Rathore VII B
KV G Nagar Sh-2

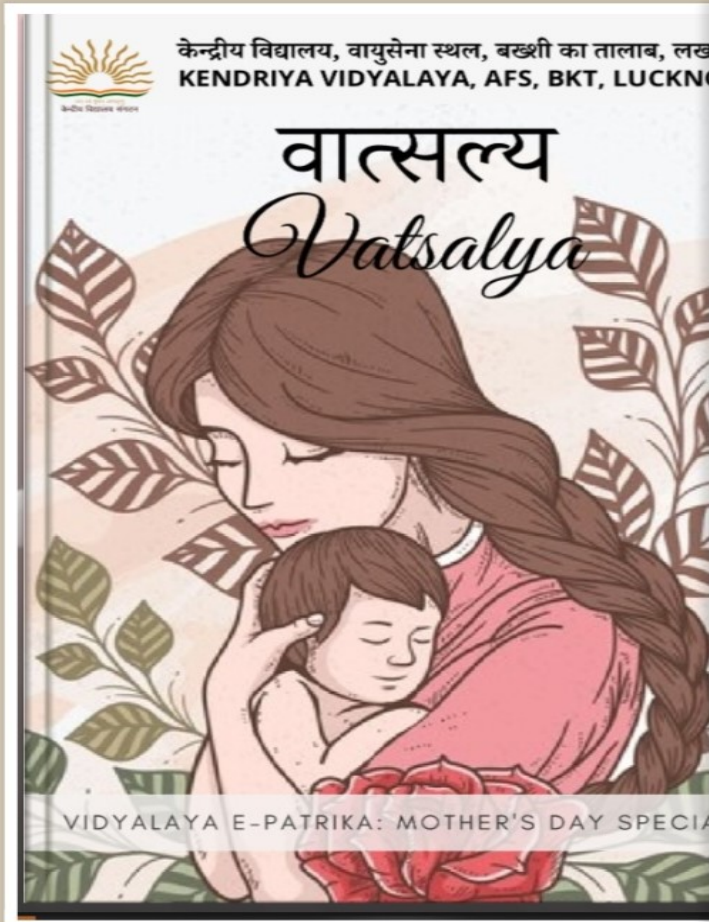
Vaishnavi Sharma XII B
KV G Nagar Sh-2







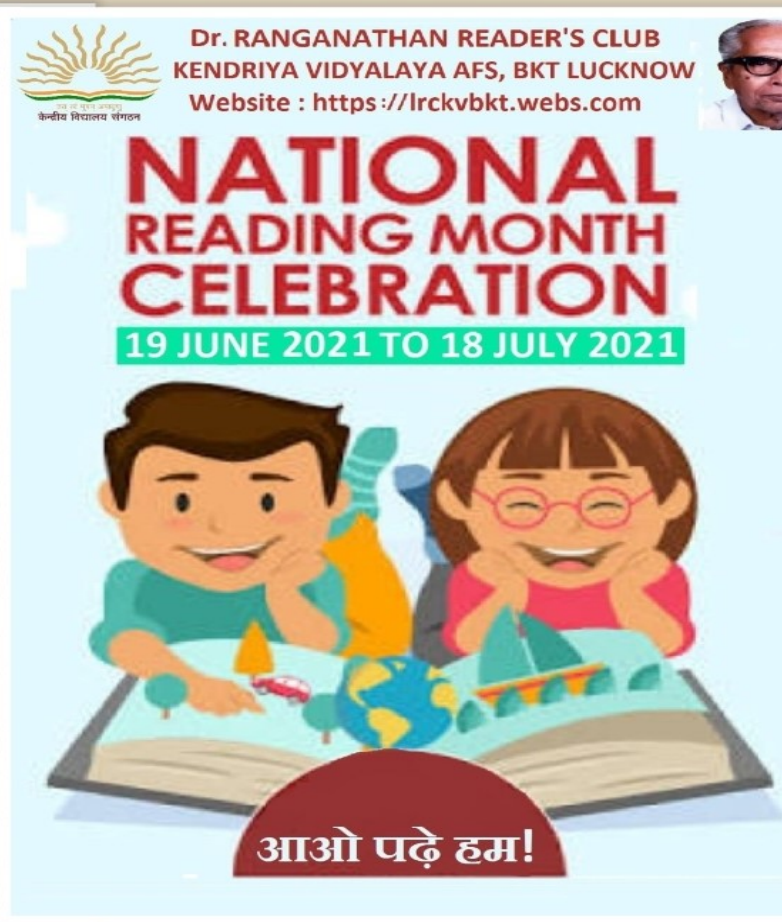




केन्द्रीय विद्यालय, वायुसेना स्थल, बख्शी का तालाब, लखनऊ
KENDRIYA VIDYALAYA, AFS, BKT, LUCKNOW

वात्सल्य
Vatsalya

VIDYALAYA E-PATRIKA: MOTHER'S DAY SPECIAL



Dr. RANGANATHAN READER'S CLUB
KENDRIYA VIDYALAYA AFS, BKT LUCKNOW
Website : <https://lrckvbkt.webs.com>

**NATIONAL
READING MONTH
CELEBRATION**

19 JUNE 2021 TO 18 JULY 2021

आओ पढ़े हम!



World Milk Day

1 JUNE 2021

Milk keeps you going

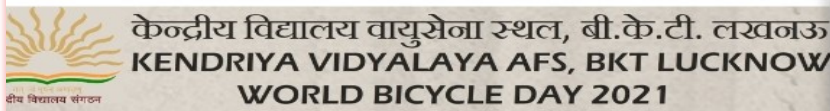
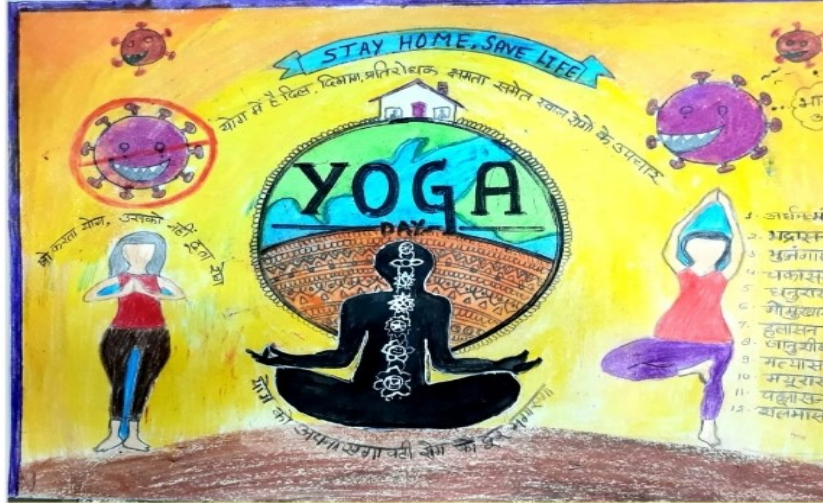
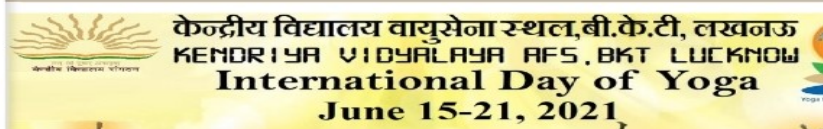
केन्द्रीय विद्यालय वायुसेना स्थल,
बख्शी का तालाब, लखनऊ (उ.प्र.)



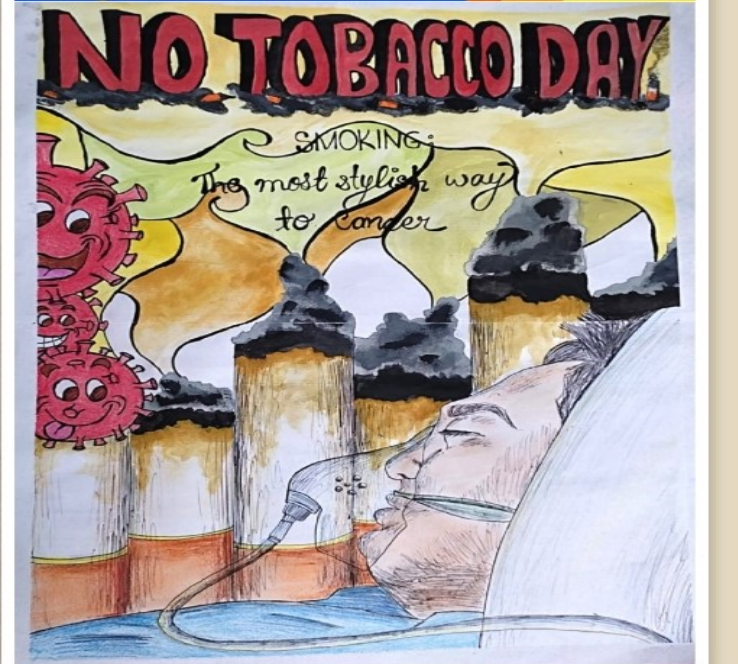
उड़ान



विजेता कु. अनन्या, 7 'ब' (टैगोर सदन) पोस्टर निर्माण प्रतियोगिता



विजेता कु. निहारिका झा, 10 'ब' (रमन सदन) पोस्टर निर्माण प्रतियोगिता





तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

DISCLAIMER: ई- पत्रिका के इस अंक में प्रकाशित लेख व कविताओं में व्यक्त विचार लेखक के अपने हैं, उससे प्रकाशन एवं संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है, एवं न ही केन्द्रीय विद्यालय संगठन का प्रतिनिधित्व करते हैं। किसी भी कॉपीराइट के उल्लंघन की ज़िम्मेदारी स्वयं लेखक की होगी।